संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
ऋषि प्रसाद
मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०१६
वर्ष : २६ अंक : ४
(निरंतर अंक : २८६)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)
निर्दोष संत को जेल में रखे जाने से व्यथित असंख्य देशवासी ३ वर्षों से निरंतर लगा रहे हैं गुहार
'आखिर कब मिलेगा न्याय ?'
२१वीं सदी में सबसे बड़ी भारतीय न्यायिक चूक है ७९ साल के संत आशारामजी बापू को न्यायालय द्वारा जमानत से निरंतर इनकार। केस बोगस है ! - सुप्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी
३१ अगस्त को पूज्य बापूजी को कारावास का कष्ट सहते तीसरा वर्ष पूर्ण
शीघ्र रिहाई हेतु देशभर में गूँजी माँग
सत्यमेव जयते !
जागो हिन्दू जागो
काला दिवस
31 अगस्त काला दिवस
अन्य अनेक तस्वीरों हेतु देखें आवरण पृष्ठ ४
अहमदाबाद आश्रम में सुसम्पन्न हुआ 'राष्ट्रीय तेजस्वी युवा शिविर'
अन्य अनेक तस्वीरों हेतु देखें आवरण पृष्ठ २
परम लाभ दिलानेवाले पंच पर्वों का पुंज : दीपावली १४
गौसेवा के आदर्श : पूज्य बापूजी २०
जब रामजी को सूझा विनोद... २४

अहमदाबाद आश्रम में सम्पन्न हुए 'राष्ट्रीय तेजस्वी युवा शिविर' की कुछ झलकें
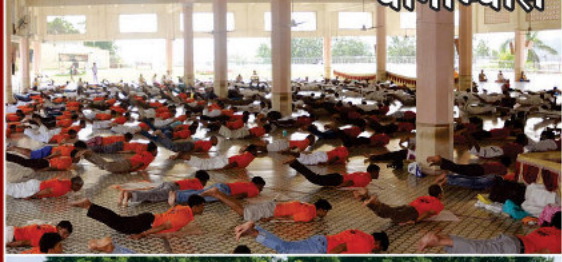
गुरुज्ञान को गुरु के प्यारे, जन-जन तक पहुँचाते ।
ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग की गंगा नित्य बहाते ॥

हरिनाम की भारी महिमा, यह सबको है तारे ।
सत्प्रचार को निकले जग में, सद्गुरु के ये प्यारे ॥

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें ।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २६ अंक : ४ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २८६)
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०१६
पृष्ठ संख्या : ३२+४ (आवरण पृष्ठ सहित)
आश्विन-कार्तिक वि.सं. २०७३

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : एडवोकेट श्री जमनादास हलाटवाला

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी	सिंधी व सिंधी (देवनागरी)
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०	₹ ३०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५	₹ ५५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५	₹ १२०
आजीवन	₹ ५००	----	₹ २९०

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

❖ बापूजी ने जीने का सही ढंग सिखाया जीवन का उद्देश्य समझाया ४
❖ जब मुनीमरूप में आये भगवान... ६
❖ प्रतिकूलता की परवाह किये बिना डट जाओ ७
❖ कृष्णा पुष्करालु (कुम्भ) के अवसर पर उठी पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग ८
❖ ''मित्र कभी दगा दे सकता है परंतु बापूजी का सत्साहित्य नहीं'' १०
❖ गुरुवर की याद में सब्र की इंतहा ११
❖ परिप्रश्नेन... १२
❖ पूज्य बापूजी के प्रेरक जीवन-प्रसंग १३
❖ परम लाभ दिलानेवाले पंच पर्वों का पुंज : दीपावली १५
❖ सकल भुवन के गान तुम्हीं हो - संत पथिकजी १७
❖ खोजें और ज्ञान बढ़ायें १८
❖ मामूली-सी प्यास सब भोगों को नरक बनाती है तो... १९
❖ श्रीमद्भगवद्गीता : एक परिचय २०
❖ गौसेवा के आदर्श : पूज्य बापूजी २२
❖ अष्टावक्र गीता २४
❖ चेतन व्यक्ति की खोज में... २५
❖ जब रामजी को सूझा विनोद... २६
❖ प्रेमभरी सेवा लगन से... २७
❖ ऐसी थी अम्माजी की गुरुभक्ति व गुरुनिष्ठा २८
❖ इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें २९
❖ साँईं श्री लीलाशाहजी की अमृतवाणी २९
❖ बछड़े का सत्संग-प्रेम व बहिणाबाई की प्रेमाभक्ति ३०
❖ जेल-अधीक्षक का सराहना-पत्र ३१
❖ प्रतिकूलता है कृपामय मौसी ३२
❖ वैराग्य से भरा अमृतोपदेश ३३
❖ ३ माह में बनाये ३५०० सदस्य, अब ७५०० का संकल्प - राकेश पटेल ३४
❖ गुरुकृपा से खुला 'श्री गुरुप्रसाद हॉस्पिटल' - डॉ. राम निचंते ३४
❖ विघ्न-बाधाओं और प्रलोभनों से कैसे बचें ? ३४
❖ स्वरयोग विज्ञान : महत्ता व उपयोग ३५
❖ शलगम में छुपे स्वास्थ्य के गुण ३६
❖ गुरु दर्शन बिन बरसत नैना - जानकी चंदनानी ३६
❖ ३१ अगस्त को देशभर में हुए धरने एवं निकली रैलियाँ - गलेश्वर यादव ३७

(गतांक से आगे)

संध्या करें उत्साह व तत्परता से

ब्रह्मवेत्ता संत पूज्य बापूजी कहते हैं : ''भाग्य के कुअंक मिटा देती है संध्या।

मेटत कठिन कुअंक भाल के।

और भी लाभ तो बहुत हैं। मन की भागदौड़ शांत होकर अंतरात्मा-परमात्मा में विश्रांति मिलने लगेगी। बुद्धियोग में प्रवेश मिल सकता है। माँ बच्चे का जितना मंगल जानती है और कर सकती है उतना बच्चे को पता नहीं, ऐसे ही माताओं की माता, पिताओं के पिता जगतनियंता हमारा जितना मंगल जानते हैं, कर सकते हैं उतना हम नहीं जानते, नहीं कर सकते हैं। संसारी मतिवाले लोग अपनी जिंदगी की, अपने समय की कोई कीमत ही नहीं समझते हैं। नियम की, नियमबद्धता की कुछ कीमत ही नहीं जानते। जैसे - भेड़-बकरे होते हैं, कोई जैसा मन में आये, चला दे... चलते गये, भागते गये। ऐसे लोगों में इच्छाशक्ति नहीं होती, आत्मिक योग्यता नहीं होती।

जो संध्या के समय का मूल्य नहीं समझते वे केवल नियम-पालन का दिखावा करने के लिए कानूनी संध्या करेंगे तो विशेष फायदा नहीं होगा। लेकिन अपने उत्साह से, अपनी तत्परता से करेंगे तो ६ महीने के अंदर व्यक्ति इतना पवित्र हो जायेगा कि... अरे, २-३ महीने के अंदर सूक्ष्म जगत के कई रहस्य उसके आगे प्रकट होने लगेंगे। इतना सारा खजाना तुम्हारे अंदर भरा है।

यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे।

जो इस पिंड में है, शरीर में है वही ब्रह्मांड में है। जैसे शक्कर की बोरी जाँचने के लिए उसमें से चुटकीभर शक्कर ले लो तो

पूरी शक्कर का पता चल जाय, ऐसे ही पूरे ब्रह्मांड का अंश यहाँ तुम्हारे साथ जुड़ा है। जैसे वटवृक्ष के बीज में वटवृक्ष छुपा है, अनंत बीज छुपे हैं, ऐसे ही मनुष्य में, जीवात्मा में परमात्मा छुपा है, अनंत सृष्टियों के फुरने छुपे हैं इसलिए तो स्वप्न में कई-कई सृष्टियाँ दिखती हैं। तुम्हारे अंदर बहुत सारी योग्यताएँ हैं ! संध्या के समय का सदुपयोग करके उन्हें जागृत करो।

साधना करनी है तो ऐसी करो

साधना करनी है तो फिर एकदम तेजी से करो। हम तुमको केवल साधक नहीं देखना चाहते हैं। हम तुमको जैसा देखना चाहते हैं - जीवन्मुक्त, ऐसा बन के दिखाओ ! जैसे मदालसा को होता था कि 'इस कोख से जो बालक जन्म ले वह फिर दूसरी माता के गर्भ में उलटा हो के टँगे तो फिर मैंने उसे व्यर्थ जन्म दिया।' ऐसे ही इस दर से जो साधक पसार हो वह फिर और कइयों के यहाँ से, द्वार से पसार हो तो फिर मेरे पास आने का मतलब क्या ! यहाँ से आदमी ६ महीना, ६ दिन भी रहकर जाय तो उसके ऊपर कोई आदेश चलानेवाला न हो ऐसा समझदार बन जाय (मुक्ति का पूर्ण अधिकारी बन जाय)।

हमारा साधक पूरे ब्रह्मांड में कहीं भी जाय लेकिन पता चल जाय कि मोटेरावाले का शिष्य है। फिर चाहे कोई हो लेकिन एक बार जो साधक हो जाय, उसकी चाल से पता चल जाय कि यह किसी ज्ञानी का शिष्य है। इसको किसी ज्ञानी का, संत का पंजा लगा है।

हम तेजी से चलाना चाहते हैं। युग बड़ा विचित्र आ रहा है। समय बहुत कीमती है। तत्परता, तत्परता, तत्परता... बस ! संध्या के समय कहीं भी हों, १० मिनट उसमें लग जाओ। उस समय हाथ-पैर धोकर ३ आचमन ले के अपना नियम कर लो। सुबह-दोपहर-शाम की संध्या करो और बाकी की जो साधना बतायी है वह भी करो। सेवा करो तत्परता से। जो काम २ घंटे का है, पौने २ घंटे में पूरा करो; ऐसा नहीं कि २ घंटे का काम १० घंटे में हो।''

आपातकाल में भी संध्या कर सकते हैं

यदि व्यक्ति सफर में है अथवा नौकरी कर रहा है तो वहाँ भी संध्या की जा सकती है। पूज्य बापूजी इसका सुंदर उपाय बताते हुए कहते हैं : ''अगर कोई दफ्तर में है तो वहीं मानसिक रूप से संध्या कर ले तो भी ठीक है लेकिन प्राणायाम, माला से जप, ध्यान और श्वासोच्छ्वास की गिनती जरूर करे। ये अनंत गुना फल देते हैं। इनसे एकाग्रता बढ़ती है। एकाग्रता सभी सफलताओं की कुंजी है। हमारी सब नाड़ियों का मूल आधार जो सुषुम्ना नाड़ी है, उसका द्वार संध्या के समय खुला हुआ होता है। इससे जीवनशक्ति, कुंडलिनी शक्ति के जागरण में सहयोग मिलता है। इस समय किया हुआ ध्यान-भजन अमिट पुण्यदायी होता है, अधिक हितकारी और उन्नति करनेवाला होता है। वैसे तो ध्यान-भजन कभी भी करो, पुण्यदायी होता है किंतु संध्या के समय उसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है। त्रिकाल संध्या करने से विद्यार्थी भी बड़े तेजस्वी होते हैं। अतः जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए मनुष्यमात्र को त्रिकाल संध्या का सहारा लेकर अपना नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उत्थान करना चाहिए।

जब से भारतवासी ऋषि-मुनियों की बतायी हुई दिव्य प्रणालियाँ भूल गये, त्रिकाल संध्या करना भूल गये, अध्यात्मज्ञान को भूल गये, तभी से भारत का पतन प्रारम्भ हो गया। (शेष पृष्ठ २६ पर)

जब मुनीमरूप में आये भगवान...

विसोबा का जन्म पंढरपुर से लगभग ८० कोस दूर औंढा नागनाथ शिवक्षेत्र में यजुर्वेदी ब्राह्मणकुल में हुआ। इनके यहाँ सराफे का काम होने के कारण ये सराफ कहे जाते थे और घर सम्पन्न था। इनका सादा और पवित्र गृहस्थ-जीवन था। घर के कामकाज करते हुए भी इनका चित्त श्रीविट्ठल में लगा रहता था। विसोबा के घर में साध्वी पत्नी और चार लड़के थे। इनके यहाँ से कभी भी अतिथि बिना सत्कार पाये नहीं जाता था। अतिथि को साक्षात् नारायण समझकर ये उसकी पूजा करते थे।

एक बार दक्षिण भारत में घोर अकाल पड़ा। अन्न मिलना भी दुर्लभ हो गया। भूख से पीड़ित हजारों स्त्री-पुरुष विसोबा के द्वार पर एकत्र होने लगे। विसोबा ने समझा कि 'नारायण ने कृपा की है। इतने रूपों में वे सेवा का सौभाग्य देने पधारे हैं।' विसोबा खुले हाथों अन्न लुटाने लगे। भीड़ बढ़ती गयी। बहुत महँगा अन्न खरीदकर बाँटने लगे। विसोबा निर्धन हो गये पर भीड़ तो बढ़ती ही गयी। घर के गहने, बर्तन आदि बेचकर भी अभ्यागतों का विसोबा ने सत्कार किया। 'जो एक दिन नगरसेठ था, वही कंगाल हो गया।' ऐसा कहकर लोग हँसी उड़ाने लगे। कोई उन्हें मूर्ख कहता तो कोई पागल बताने लगा। विसोबा के पास धन होने पर जो चाटुकारी किया करते थे, वे ही व्यंग्य कसने लगे। किंतु सभीमें अपने प्रभु को देखनेवाले विसोबा को इन बातों की परवाह नहीं थी। निरंतर बाँटते रहने के कारण उनके पास कुछ भी नहीं बचा। अब कंगाल व भूखे अभ्यागतों का स्वागत कैसे हो ? अन्न आये कहाँ से ?

विसोबा ने अपने गाँव से कई कोस दूर कॉसे गाँव जाकर वहाँ के एक पठान से कई हजार रुपये ब्याज पर उधार लिये। इनके आनंद का पार नहीं रहा। पुनः अन्न खरीदकर दरिद्रनारायणों की सेवा में लगाने लगे। गाँव के लोगों को इनके कर्ज लेने की बात का पता लग गया। द्वेषियों ने जाकर पठान से इनकी वर्तमान दशा बता दी। वह आकर इनसे रुपये माँगने लगा। इन्होंने कहा : "मैं सात दिन में रुपये दे दूँगा।" पठान मान तो नहीं रहा था पर गाँव के सज्जन लोगों ने उसे समझाया। वे जानते थे कि विसोबा अपनी बात के पक्के हैं। पठान चला गया।

छः दिन बीत गये। विसोबा कहाँ से प्रबंध करें ? अब उन्हें कौन कर्ज देगा ? वे रात्रि में भगवान से प्रार्थना करने लगे, 'नाथ ! आज तक आपने मेरी एक भी बात खाली नहीं जाने दी। आज मेरी लाज आपके हाथों में है। हे हरि ! मैं आपकी ही बाट देख रहा हूँ।' सच्चे हृदय की कातर प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती। उन लीलाधर परमेश्वर ने विसोबा के मुनीम का रूप धारण किया और समय पर पठान के पास पहुँच गये। पठान को आश्चर्य हुआ कि ऐसे अकाल के समय इतने रुपये विसोबा को किसने दिये ! पर उन मुनीम-रूपधारी ने उसे समझा दिया कि विसोबा की साख तथा सच्चाई के कारण रुपये मिलने में कठिनाई नहीं हुई। कई आदमियों के सामने हिसाब करके ब्याजसहित पाई-पाई मुनीम ने चुका दी और भरपाई की रसीद लिखवा ली। दूसरे दिन विसोबा पूजा करके सीधे पठान के घर पहुँचे। उससे बोले : "भाई ! मुझे क्षमा करो। मैं तुम्हारे रुपये पूरे ब्याजसहित दे दूँगा। मुझे कुछ समय दो।"

पठान आश्चर्य में आकर बोला : "यह आप क्या कह रहे हैं ? आपका मुनीम कल ही तो पूरे रुपये दे गया है। मैंने आपसे रुपये माँगकर गलती की। जितने रुपये चाहिए, आप ले जाइये। आपसे रसीद लिखवाने की मुझे कतई जरूरत नहीं थी।"

विसोबा के आश्चर्य का पार नहीं रहा। गाँव के लोगों ने भी बताया कि 'आपका मुनीम रुपये दे गया है।' घर लौटकर मुनीम से उन्होंने पूछा। बेचारा मुनीम भला क्या जाने ! वह हक्का-बक्का रह गया। अब विसोबा को निश्चय हो गया कि 'यह सब मेरे सर्व-अंतर्यामी, सर्वाधार, सर्वसमर्थ प्रभु की ही लीला है।' (शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रतिकूलता की परवाह किये बिना डट जाओ - पूज्य बापूजी

(१३ मई १९८४ को न्यूजर्सी (यूएसए) से दूरभाष द्वारा दिया गया सत्संग)

तुम लोग कैसे हो ? गुरुपूनम के इर्द-गिर्द आ ही जायेंगे। कल शिकागो जायेंगे।

कल मैंने यहाँ से साढ़े १२ बजे फोन किया था तो वहाँ साढ़े ९ - साढ़े १० बजे थे। कल शनिवार था, आज रविवार है। दिन, समय, देश बदलता है लेकिन तुम्हारा चैतन्यस्वरूप कभी नहीं बदलता।

सुना तो बहुत है, अब उसे जमा दो।

पत्र में लिखकर पूछा गया था कि 'आपके खाने में क्या होता होगा ? वहाँ लोग कैसा व्यवहार करते होंगे ?'

यहाँ तो सब साधक-परिवार हैं। हमारे लिए (अन्य भी) सब सज्जन ही हो जाते हैं। तुम मेरी चिंता मत करो। तुम ऐसे बन जाओ कि तुम्हारी चिंता मैं न करूँ।

मनुष्याणां सहस्रेषु... हजारों में कोई एक ही ईश्वर के रास्ते पर चल पाता है। ईश्वर के रास्ते चलते समय जो प्रतिकूलता की परवाह किये बिना डट जाता है वह सत्यस्वरूप हो जाता है, अपने-आपमें जग जाता है। सच पूछो तो सब जगे हुए ही हैं।

मोटेरा में महफिल (सत्संग-कार्यक्रम) नहीं जमती तो अपने दिल में महफिल जमाओ, जिस पृथ्वी पर कदम रखो वह पृथ्वी जमने लग जाय (धन्य हो जाय)। जिस पेड़-पौधे को निहारो वह भी 'शिवोऽहम्-शिवोऽहम्...' गाने लग जाय।

(पृष्ठ ६ से 'जब मुनीमरूप...' का शेष) उन्हें बड़ी ग्लानि हुई कि उनके लिए पांडुरंग को इतना कष्ट उठाना पड़ा। सब कुछ छोड़-छाड़कर वे पंढरपुर चले आये और भजन-सुमिरन में लीन हो गये।

संत ज्ञानेश्वरजी के मंडल में विसोबा सम्मिलित हुए। उन्होंने योग एवं वेदांत का अभ्यास किया और सिद्ध महात्मा माने जाने लगे। उन्होंने स्वयं कहा है : ''चाँगदेव को मुक्ताबाई ने अंगीकार किया और सोपानदेव ने मुझ पर कृपा की। अब जन्म-मरण का भय नहीं रहा।''

नामदेवजी को भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया कि वे संत विसोबा से दीक्षा लें। इस भगवदीय आज्ञा को स्वीकार करके जब नामदेवजी इनके पास आये तो ये एक मंदिर में शिवलिंग पर पैर फैलाये लेटे थे। नामदेवजी को इससे बड़ा आश्चर्य हुआ। इन्होंने कहा : ''नाम्या ! मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मुझसे पैर उठते नहीं। तू ऐसे स्थान पर मेरे पैर रख दे जहाँ शिवलिंग न हो।'' नामदेवजी ने इनके चरण वहाँ से हटाकर नीचे रखे पर वहाँ भूमि में से दूसरा शिवलिंग प्रकट हो गया। जहाँ भी चरण रखे जाते, वहाँ शिवलिंग प्रकट हो जाता। अब नामदेवजी समझ गये। वे गुरुदेव के चरणों में गिर पड़े। इनकी कृपा से ही नामदेवजी को आत्मज्ञान हुआ। नामदेवजी ने अपने अभंगों में गुरु विसोबाजी की बड़ी महिमा गायी है।

कृष्णा पुष्करालु (कुम्भ) के अवसर पर
उठी पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग

आंध्र प्रदेश, कर्नाटक व तेलंगाना में कृष्णा नदी के तट पर हर १२ वर्ष में कृष्णा पुष्करालु (कुम्भ) आयोजित होता है। इस वर्ष १२ से २३ अगस्त तक हुए इस कुम्भ में लाखों-करोड़ों श्रद्धालुओं ने पवित्र कृष्णा नदी में डुबकी लगायी। इस अवसर पर विभिन्न मत-सम्प्रदायों के साधु-संतों, हिन्दू संगठनों के प्रमुखों एवं संस्कृतिप्रेमियों ने निर्दोष पूज्य बापूजी को कारागृह में रखे जाने का विरोध करते हुए पूज्यश्री की शीघ्र रिहाई की माँग की।

श्री श्री श्री त्रिदंडी चिन्ना श्रीमन् नारायण रामानुज जीयर स्वामी, प्रमुख, श्रीमद् उभय वेदांत आचार्य पीठम् : संत आशारामजी बापू के ऊपर अत्याचार करना, उनके ऊपर झूठे आरोप लगाना, यह समाज को सहन नहीं करना चाहिए, इसके प्रति कुछ आंदोलन चलाना जरूरी है। हम भगवान से प्रार्थना करेंगे कि वे जल्दी-से-जल्दी बाहर आ जायें।
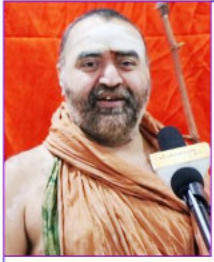
कांची कामकोटी पीठ के ७०वें शंकराचार्य श्री विजयेन्द्र सरस्वतीजी : संत आशाराम बापूजी की रिहाई के लिए हम सब लोगों को प्रार्थना करनी चाहिए, प्रयास करने चाहिए।

ब्रह्मचारी श्री शिव स्वामी, श्री शैवक्षेत्र पीठाधिपति, गुंटूर (आं.प्र.) : विश्वधर्म परिरक्षण वेदिका और विश्व हिन्दू

परिषद बापूजी पर लगे आरोपों का तीव्र रूप से खंडन करती हैं। गुरु लोग ही जीतते हैं और अंत तक टिकते भी हैं। आखिर धर्म की जीत होगी।

शंकराचार्य जगद्गुरु श्री श्री श्री सिद्धेश्वरानंद भारतीजी, पीठाधिपति, श्री सिद्धेश्वरी पीठम्, कोर्तल्लम (तमिलनाडु) : संत आशारामजी बापू को स्वतंत्रता का अधिकार देना चाहिए। जरूरत पड़े तो समाज को न्याय और धर्मयुक्त नीति से शक्ति-प्रदर्शन भी करना चाहिए और जो धर्म के मार्ग पर लगे हैं उन्हें झूठे आरोपों व षड्यंत्रों से बचाने का पूरा प्रयास करना चाहिए।

श्री श्री श्री त्रिदंडी श्रीनिवास व्रतधर नारायण रामानुज जीयर स्वामी, मठाधिपति, श्री जगन्नाथ मठ, हैदराबाद : पॉक्सो कानून के तहत माननीय, आदरणीय बापूजी को टारगेट किया गया है, यह बिल्कुल ही गलत है। सरकार ऐसे कानूनों को खत्म करे या उनमें सुधार करे। हमारे बापूजी बेदाग छूटेंगे, इसमें कोई दो राय नहीं है। सारे संतों को बापूजी के समर्थन में आगे आना चाहिए। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि 'बापूजी निर्दोष छूटकर फिर से जनता की सेवा करें और पूर्ववत् हम सारे संतों का मार्गदर्शन करें।

स्वामी श्री श्रीनिवासानंद सरस्वतीजी, अध्यक्ष, उत्तर आंध्रा साधु परिषद : महान संत आशारामजी बापू के खिलाफ आज भी कोई सबूत नहीं है। फिर वे आज भी जेल में क्यों हैं ? यह पूरी तरह से जानबूझकर किया गया है। स्वामीजी ने कुछ भी गलत नहीं किया है, वे तो हिन्दू धर्म और समाज की इतनी सेवा कर रहे हैं। हम उन्हें जेल में रखे जाने की निंदा करते हैं और सरकार से अनुरोध करते हैं कि जल्द-से-जल्द स्वामीजी को रिहा करे। नहीं तो हम आंध्र प्रदेश के ही नहीं, देशभर के सभी साधु अखिल भारतीय साधु परिषद की बैठक बुलाकर प्रस्ताव पारित करेंगे कि बापूजी को छोड़ा जाय।

वर्तमान परिस्थिति को समझें, नहीं तो आज स्वामीजी हैं, कल दूसरे कोई स्वामीजी होंगे, उसके बाद और कोई दूसरे होंगे जिन पर कितने ही बेहूदा मामले धर दिये जायेंगे।

श्री श्री श्री स्वामी परिपूर्णानंदगिरिजी, व्यास आश्रम, चित्तूर (आं.प्र.) : इस उम्र में संत आशारामजी बापू को जेल में रखना बिल्कुल भी ठीक नहीं है। सरकार उन्हें जल्दी से रिहा करे। करोड़ों की तादाद में उनके भक्त दुःखी हैं।

श्री दुर्गा प्रसाद स्वामीजी, पीठाधिपति, श्री हनुमान दीक्षा पीठ : संत महात्मा आशारामजी बापू के केस का हम पूरा खंडन कर रहे हैं। यह केवल राजनीतिक षड्यंत्र है। जल्दी ही वे जेल से बाहर आने चाहिए।

टी. राजा सिंहजी, विधायक, हैदराबाद : पिछले ३ वर्षों से संत आशारामजी बापू, नारायण स्वामीजी जेल में बंद हैं, उनका क्या कसूर है ? सिर्फ इतना ही कि जहाँ-जहाँ धर्मांतरण किया जा रहा था, वहाँ-वहाँ जाकर आशारामजी बापू धर्मांतरित लोगों को हिन्दू धर्म में वापस लाये यानी घर-वापसी का कार्यक्रम बड़े पैमाने पर किया। उनका कसूर है कि उन्होंने हिन्दुत्व का, धर्म का प्रचार किया।

३ साल हो गये, उन पर जो आरोप लगे हैं वे आज तक साबित नहीं हुए इसीलिए उनको तुरंत जेल से रिहा करने की आवश्यकता है। मैं हर हिन्दू से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि एक बहुत बड़ा आंदोलन पूरे भारत देश में छेड़ने की आवश्यकता है उन साधु-संतों के लिए, जिनके द्वारा हुई संस्कृति-रक्षा की वजह से आज हम गर्व से कहते हैं कि 'मैं हिन्दू हूँ।'

श्री एन.वी.वी.एस. प्रभाकर, विधायक, उप्पल (तेलंगाना) : हिन्दुओं के संतों के बारे में ही ऐसा (कुप्रचार) हो रहा है, यह षड्यंत्र है। इसके पहले कांची के शंकराचार्य के ऊपर भी ऐसे २-३ केस लगाये थे, कोई कोर्ट में नहीं ठहर सका। बापूजी के केस का भी यही होगा। आशारामजी बापू जरूर निष्कलंक रूप से बाहर आयेंगे।

(पृष्ठ ११ का शेष) औरों को दीक्षा देने का आदेश दिया। शाह दरवेश मुहम्मद अपने गुरुदेव के शरीर छोड़ने तक उनकी सेवा में हाजिर रहे और सन् ९७० हिजरी (सन् १५६२) तक अपने गुरुदेव के ज्ञान से समाज को लाभान्वित करते रहे।

अधिवक्ता श्री लोकनाथ शर्माजी, अखिल भारतीय उपाध्यक्ष, धर्म प्रसार विभाग, विहिप : संत आशारामजी बापू एक महानतम संत हैं । धर्मांतरण करनेवालों को यह महसूस हुआ कि स्वामीजी (बापूजी) की उपस्थिति निश्चित ही उनके लिए बाधा कर रही है इसलिए एक ७९ साल के संत पर ऐसे घृणित आरोप लगाये गये । इस तरीके से वे हिन्दू संतों को सताने और बदनाम करने का काम कर रहे हैं ।

परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री श्री श्री सच्चिदानंद तीर्थ स्वामीजी, शृंगेरीपीठम् : संत आशारामजी बापू के साथ जो हो रहा है, वह बिल्कुल गलत है । मैं शृंगेरीपीठम् की तरफ से यही चाहता हूँ कि उन्हें अब तुरंत बेल मिलनी चाहिए ।

''मित्र कभी दगा दे सकता है परंतु बापूजी का सत्साहित्य नहीं''

पूज्य बापूजी के भानजे शंकरभाई (शहंशाहजी) को आश्रम के सत्साहित्य के अध्ययन की बहुत रुचि थी । उन्होंने पूज्यश्री के सत्संग के सम्पूर्ण सत्साहित्य का अध्ययन कर लिया था । वे कई बार बोलते थे कि ''मित्र कभी दगा दे सकता है परंतु बापूजी का सत्साहित्य कभी दगा नहीं देगा । मित्र को सहायता के लिए रात को उठाओ तो हो सकता है कि नहीं भी उठे लेकिन बापूजी के सत्साहित्य को कभी भी उठाओ, पढ़ो तो सहायता, सांत्वना मिलेगी, अच्छा ज्ञान मिलेगा, जीवन की समस्याओं का समाधान हो जायेगा ।''

शहंशाहजी ने आश्रम के सत्साहित्य-विमोचन का प्रसंग बताते हुए कहा था :

पूज्यश्री के सत्संग की 'ईश्वर की ओर' नामक पुस्तक के विमोचन के बाद बापूजी पुस्तक हाथ में लेकर बोले : ''इस पुस्तक को कोई व्यक्ति बार-बार पढ़े, मनन-निदिध्यासन करे और फिर भी उसे आत्मसाक्षात्कार न हो तो मैं सिर कटा लूँगा ।''

शहंशाहजी बोले : ''अपनी कृति, अपने सिद्धांत पर इतना प्रचंड आत्मविश्वास जिसे हो, ऐसा रचनाकार या वक्ता आज दुनिया में शायद ही कोई हो । मैंने तो आज तक नहीं देखा ।''

अहमदाबाद आश्रम में सम्पन्न हुआ
राष्ट्रीय तेजस्वी युवा शिविर

अहमदाबाद आश्रम में १० से १२ सितम्बर तक 'युवा सेवा संघ' का 'राष्ट्रीय तेजस्वी युवा शिविर' सम्पन्न हुआ । इस तीन दिवसीय शिविर में युवकों को श्री सतीश भाई के प्रवचन के अलावा योगाभ्यास, यौगिक युक्तियों के प्रशिक्षण, आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी, स्वाध्याय, साधनाओं, संध्या-वंदन आदि का भी लाभ मिला । साथ ही युवाओं ने पूज्य बापूजी के दुर्लभ विडियो सत्संग से साधना में आगे बढ़ने हेतु आध्यात्मिक उन्नति के रहस्य व युक्तियाँ समझीं । (ऋषि प्रसाद प्रतिनिधि : गलेश्वर यादव)

गुरुवर की याद में सब्र की इंतहा

एक बार सूफी फकीर शेख मुहम्मद जाहिद ने अपने शिष्य शाह दरवेश मुहम्मद को एक पहाड़ पर जाकर वहाँ उनका इंतजार करने की आज्ञा दी और कहा कि वे वहाँ पर बाद में आयेंगे।

शाह दरवेश मुहम्मद एक क्षण भी देर किये बिना उठकर चल दिये। वे वहाँ पहुँचकर अपने गुरुदेव की प्रतीक्षा करने लगे। सूर्य ढलने को हुआ, अभी तक गुरुदेव वहाँ नहीं आये। उनका मन कहने लगा : 'हो सकता है कि गुरुदेव इस बात को भूल गये हों। वापस चल।' किंतु शाह दरवेश ने मन की आवाज को साथ देने से इनकार कर दिया। उन्होंने अपने गुरुदेव की प्रतीक्षा नहीं छोड़ी। रात्रि में पहाड़ पर कड़ाके की ठंड पड़ने लगी, जिसने शाह को अपनी जकड़ में ले लिया और वे पूरी रात सो नहीं पाये। उनके पास उष्मा का एकमात्र स्रोत अपने गुरु की याद का था। उस सघन रात्रि के बाद सुबह आयी लेकिन शेख मुहम्मद जाहिद का आगमन अभी दूर था।

शाह दरवेश भूखे थे। वे खाने की तलाश में इधर-उधर कुछ ढूँढ़ने लगे। उन्होंने वृक्षों से फल खाकर अपनी भूख मिटायी और अपने गुरुदेव की प्रतीक्षा करने लगे। वह दिन भी यूँ ही गुजर गया और उसके बाद अगला दिन भी। उनकी धारणा और दृढ़ होने लगी कि 'मेरे गुरुदेव जानते हैं कि मैं क्या कर रहा हूँ।'

एक सप्ताह गुजरा और फिर एक माह। शेख मुहम्मद जाहिद नहीं आये। शाह दरवेश प्रतीक्षा करते रहे और अपना समय प्रार्थना व गुप्त जप (अनहद नाद) करने में गुजारते रहे। सर्दियों के मौसम में पहाड़ पर बर्फ गिरने से पेड़ों से फल-फूल भी खत्म हो गये। अब दरवेश मुहम्मद बचे-खुचे पत्तों, जड़ों व पेड़ों की छालों से अपना गुजारा करने लगे। उनकी तपस्या रंग लायी। जंगली पशु उनके पास आकर शांति से उन्हें घेरकर बैठ जाते। उन्हें एहसास होने लगा कि यह चमत्कारिक शक्ति उनके गुरुदेव की देन है। वे हिरणियों से दूध ग्रहण कर अपनी भूख मिटाने लगे। जब वे हिरणियों का दूध दुहते तो वे निश्चल खड़ी रहतीं। उनके गुरुदेव इन सबके द्वारा उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान प्रेषित कर रहे थे और वे इस पथ पर आगे बढ़ रहे थे।

साल-दर-साल यूँ ही गुजर गये। शेख मुहम्मद जाहिद अभी अपने वादे के अनुसार वहाँ नहीं आये थे लेकिन शाह दरवेश निरंतर उनकी याद में सब्र की इंतहा (पराकाष्ठा) को पार कर रहे थे। उन्हें एक नवीन ज्ञान प्राप्त हो रहा था और हृदय में विश्वास दृढ़तर हो रहा था कि उनके गुरुदेव को इस सबकी खबर है। उनका हृदय गुरुदेव के प्रति अलौकिक प्रेम से सराबोर हो रहा था और अंत में सात वर्ष बीतने पर उन्हें वातावरण में अपने पूज्य गुरुदेव की खुशबू का एहसास होने लगा। गुरु सातवें वर्ष के अंत में वहाँ पहुँचे। जब शाह दरवेश मुहम्मद ने उन्हें देखा तो उनका हृदय अपार आनंद से भर आया। उनके हृदय में प्रेम का ज्वार आया और वे गुरुदेव की अगवानी के लिए दौड़ पड़े।

शेख मुहम्मद जाहिद ने उन्हें देखा और पूछा कि ''तुम यहाँ क्या कर रहे थे और पहाड़ से वापस लौटकर क्यों नहीं आये ?'' शाह दरवेश ने निवेदन किया कि ''मैं यहाँ आपकी आज्ञानुसार आपकी प्रतीक्षा कर रहा था।'' शेख मुहम्मद जाहिद ने कहा : ''यदि मैं भूल जाता या मेरी मृत्यु हो गयी होती तो ?''

शाह दरवेश ने पुनः निवेदन किया : ''मेरे पूज्य गुरुदेव यह कैसे भूल सकते हैं क्योंकि वे परमात्मा का प्रकट रूप हैं।''

शेख मुहम्मद मुस्कराये, बोले : ''आओ, मेरे साथ चलो।'' उसी क्षण उन्होंने शाह दरवेश मुहम्मद के हृदय को अपने सम्पूर्ण प्रेम व ज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। उन्हें पूर्ण आचार्य की पदवी प्रदान कर (शेष पृष्ठ ९ पर)

परिप्रश्नेन...

प्रश्न : गुरुदेव से सीधा संबंध किस तरह बनायें ? गुरुजी से किस तरह मानसिक बातचीत करें ?

पूज्य बापूजी : ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः...

इससे मेरा भी मानसिक संबंध गुरुजी से जुड़ जाता था । गुरुदेव का ध्यान करोगे तो गुरुदेव दिखने लगेंगे, गुरुदेव से मानसिक बातचीत भी होगी, प्रसन्नता और आनंद आने लगेगा । संसार का आकर्षण बिल्कुल कम हो जायेगा ।

प्रश्न : परमात्मप्राप्ति में नियमों का पालन जरूरी है कि सिर्फ परमात्मा के प्रति तड़प बढ़ाने से ही परमात्मप्राप्ति हो सकती है ?

पूज्यश्री : परमात्मप्राप्ति के लिए नियम बनायेंगे तभी तड़प होगी, तड़प होगी तभी मिलेंगे । परमात्मप्राप्ति की तड़प है और जैसा-तैसा खाया, मासिक धर्मवाली स्त्री के हाथ का बनाया हुआ खाया, फिल्में देखीं, जो मन में आया कर लिया तो यह बेवकूफी की बात है । जितना आहार-व्यवहार शुद्ध होगा उतनी उन्नति होगी । परमात्मप्राप्ति के उद्देश्यवाले और किसी चीज को महत्त्व नहीं देते ।

प्रश्न : क्या गृहस्थी बहनें ईश्वरप्राप्ति के लिए ॐकार की १२० माला कर सकती हैं ?

पूज्य बापूजी : पहली बात, तुम अपने को गृहस्थी मानकर माला करो ही मत । 'हम स्त्री हैं, पुरुष हैं, अयोग्य हैं, पापी-दुराचारी हैं अथवा हम बढ़िया हैं' यह सारी गड़बड़ छोड़ दो । 'हम भगवान के थे, हैं और रहेंगे । भगवान के होकर हम अपने को चैतन्य स्वभाव में जागृत करेंगे ।' ईश्वरप्राप्ति सभी कर सकते हैं । ॐकार की उपासना से शुरू में थोड़ा विक्षेप जैसा लगेगा लेकिन आगे ठीक हो जायेगा । अर्थ के साथ जप करें और आत्मा में शांत होते जायें ।

प्रश्न : काम, क्रोध, लोभ में आकर मैंने कई अयोग्य व्यवहार किये हैं । क्या मुझे ईश्वरप्राप्ति हो सकती है ?

पूज्यश्री : पहले जो गलती की, पाप किया उसके लिए बंद कमरे में अकेले में भगवान के आगे रोकर माफी माँग लो और दुबारा गलती न करने का दृढ़ संकल्प करो । और पुकारो :

'दीन दयाल बिरिदु संभारी ।
हरहु नाथ मम संकट भारी ।।

(श्री रामचरित. सुं.कां. : २६.२)

हे प्रभु ! रजोगुण, तमोगुण के माहौल में फिसलाहट होती है, रक्षा करो, मुझे बचाओ ।' प्रतिदिन गलती न करने के दृढ़ संकल्प को दोहराओ । सुबह गहरा श्वास लेकर ॐकार का दीर्घ जप करो । अपनी उस गलती को सामने लाकर भगवान की कृपा की गदा लगा दो, फिर शांत हो जाओ । 'भगवान के बल से रक्षित, पोषित होने से अब यह गलती नहीं करेंगे । और मैंने गलती की नहीं, गलती तो मन ने, शरीर ने, बुद्धि ने की । मैं तो परमात्मा का, परमात्मा मेरे ।' अपने में गलती मानोगे और निकालोगे तो मेहनत ज्यादा पड़ेगी । मन, इन्द्रियों द्वारा गलती दुबारा नहीं होगी - ऐसा प्रयत्न करके अपने को भगवान में शांत करते जाओ तो आपका बल बढ़ जायेगा, फिर बुद्धि आपको नहीं घसीटेगी । आप बुद्धि को ठीक करने जाओगे तो मन, इन्द्रियाँ आपको घसीटेंगी । साधक के जीवन में यह बड़ी लड़ाई आ जाती है, फिसलाहट आ जाती है । सफल होने पर अहंकार आ जाता है । अहंकार आते ही 'जरा इतना खा लिया, जरा यह कर लिया तो क्या फर्क पड़ता है !' फिर फिसलने लग जाता है । ऐसी स्थिति में सावधान रहे ।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ।।

सत्य का आश्रय ले तो जल्दी ईश्वरप्राप्ति होगी ।

पूज्य बापूजी के प्रेरक जीवन-प्रसंग

अहमदाबाद के श्री बिजल भाई विहोल पूज्य बापूजी का दिसम्बर १९७९ से सान्निध्य पाते रहे हैं। पूज्यश्री के सत्संग-सान्निध्य से हुई अनुभूतियों को वे गद्गद हृदय से बताते हैं :

और पूरा शरीर शांत व निर्मल हो गया

मैंने १९८० में पूज्य बापूजी के सान्निध्य में उत्तरायण ध्यानयोग शक्तिपात साधना शिविर में भाग लिया। शक्तिपात द्वारा बापूजी ने ऐसी कुछ करुणा की कि ध्यान के दौरान अपने-आप मेरा पादपश्चिमोत्तानासन लग गया। पूरा शरीर शांत व निर्मल होने लगा। पूज्यश्री बोले : ''साढ़े ३ मिनट तक इसी आसन में रुक जाओ।''

लेकिन पूर्व का कोई पाप रहा होगा कि मैं साढ़े ३ मिनट तक नहीं रुक पाया, जिससे मेरे शरीर से खूब बदबू निकलने लगी। जैसे मुझे ६ महीने से बीमारी हो ऐसा मेरा शरीर हो गया। शिविर पूरा हुआ तो मैं घर गया। हफ्तेभर में मेरे शरीर की बदबू कम होते-होते खत्म हो गयी। फिर मैं बापूजी के दर्शन करने आया तो बापूजी ने अम्माजी (माँ महँगीबाजी) को बोला : ''देखो, सम्प्रेषण शक्ति से ७ दिन में इसमें कैसा परिवर्तन हो गया !''

उस ध्यानयोग शिविर के बाद मुझे तन-मन में बहुत स्फूर्ति व आनंद का एहसास हो रहा था।

'प्रबल संकल्पवश हमें वापस आना पड़ा'

१९८४ की बात है। कड़ी गाँव में बापूजी का सत्संग था। मैंने पूज्यश्री के श्रीचरणों में प्रार्थना की : ''बापूजी ! हमारे घर को पावन कीजिये, एक बार चरण घुमाइये।''

बापूजी बोले : ''सोचेंगे, लेकिन रास्ते में खड़े मत रहना।''

मेरे घर के नजदीक से गाड़ी निकली तो सेवकों ने पूज्यश्री को बताया कि ''बापूजी ! बिजल भाई ने आपश्री को अपने घर में चरण घुमाने की प्रार्थना की थी। वैसे उनके घर से हम काफी आगे निकल चुके हैं।'' बापूजी ने गाड़ी का मार्ग बदलवाया और हमारे घर आकर बोले : ''यहाँ किसीका प्रबल संकल्प था इसलिए हमें आगे जाकर भी वापस आना पड़ा।''

फिर बोले : ''तुम्हारा घर चिड़िया के घोंसले जैसा है।''

हमने सोचा कि गुरुवर के श्रीमुख से ऐसे वचन निकले हैं तो जरूर कुछ बदलाव आयेगा और वास्तव में

कुछ ही समय में हमारा घर बहुत बड़ा हो गया।

बापूजी ने पितरों के दर्शन कराये

एक बार की बात है, श्राद्ध के दिन थे। बापूजी से मैंने कहा : ''बापूजी ! मुझे श्राद्ध करना है।''

पूज्यश्री मौज में आकर बोले : ''जिसको गरज होगी वह करेगा, तुम कुछ मत करना।''

मैंने प्रयास छोड़ दिया। घरवालों ने मिलकर श्राद्ध कर लिया। रात को स्वप्न में मुझे एक पगड़ीधारी व्यक्ति दिखे जो चिलम पी रहे थे। उन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मैंने सब कुछ पिताजी को बताया तो वे दंग रह गये ! उन्होंने बताया कि वे मेरे पितामह थे। मुझे गुरुआज्ञा-पालन का महत्त्व पता चला कि श्राद्ध तो घरवालों ने किया लेकिन पितरों के दर्शन मुझे हुए।

सीधे गोद में जाकर गिरा

साधना में तीव्रता से ऊँचाई पर पहुँचने के लिए जिज्ञासु साधक ७ दिन के लिए आश्रम के मौन-मंदिर में रहते हैं। भोजन व आवश्यकतावाली वस्तु वहीं पहुँचायी जाती है।

मैं भी ७ दिन अंदर रहा। पूज्यश्री शाम या रात को कभी-कभार आते थे और 'कैसा है ? क्या है ?...' ऐसा पूछते थे।

जो लोग मौन-मंदिर से ७ दिन बाद बाहर निकलते थे उनको कुछ अनुभूति या क्रियाएँ होती थीं। पर मैं बाहर निकला तो दौड़ के वहाँ पहुँचा जहाँ व्यासपीठ पर बापूजी सत्संग कर रहे थे और सीधा पूज्यश्री की गोद में जा गिरा। पता नहीं मैंने कैसे छलाँग लगा दी ! पहले काँच की केबिन नहीं थी।

पूज्यश्री ने कहा : ''तुम (कृपावर्षा को) झेल नहीं पाये।''

भीतर कचाई थी। हृदय में इच्छा-वासना होती है तो वह साधना को बिखेर देती है। जो पूरा समर्पित होता है उसको तो बापूजी पूरा पहुँचा देते हैं।

बापूजी के सान्निध्य में नेपाल-यात्रा

एक बार हरिद्वार में नारायण साँईंजी ने पूज्यश्री को बताया : ''बापूजी ! नेपाल जानेवाली एक लक्जरी बस की १०-१२ सवारियाँ चली गयी हैं। बसवाला यात्रियों को ढूँढ़ रहा है।''

बापूजी तो अलमस्त संत हैं। वे जाने के लिए तैयार हो गये और बोले : ''और किसको आना है हमारे साथ ?''

हम सबने उँगली उठा दी। फिर बापूजी के साथ गाड़ी में बैठे। पूज्यश्री कभी-कभी स्वयं लक्जरी बस चलाते थे।

बापूजी बोलते : ''हमारे साथ बैठो इधर।'' हमें तो संकोच होता कि बापूजी के साथ कैसे बैठें ! बापूजी डाँटते थे कि ''हमारा वचन क्यों काटता है !''

नेपाल में बापूजी ट्रक में बैठते, बोलते : ''तुम इधर बैठो। अभी साथ में बैठे हो, आगे ऐसा समय आयेगा कि दर्शन दुर्लभ हो जायेंगे।''

और बाद में भक्तों की संख्या इतनी बढ़ गयी कि वैसा सान्निध्य और दर्शन दुर्लभ ही हो गया। बापूजी शीघ्र ही निर्दोष छूटकर आयेंगे और तब तो भक्त इतने बढ़ेंगे कि केवल दर्शन भी महादुर्लभ हो जायेंगे।

सुख के लिए आदमी न करने जैसा काम भी करता है, फिर भी सुख टिकता नहीं है क्योंकि वह दुःखालय संसार से सुख लेता है। हम सुख को थामने के लिए और दुःख को भगाने के लिए दिन-रात लगे रहते हैं फिर भी सुख थमता नहीं, दुःख भागता नहीं। दुःखी आदमी का दुःख तब तक जीवित रहता है जब तक उसकी संसार से सुख लेने की भूल जीवित है। -पूज्य बापूजी

परम लाभ दिलानेवाले पंच पर्वों का पुंज : दीपावली

(दीपावली पर्व : २८ अक्टूबर से १ नवम्बर)

- पूज्य बापूजी

आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक, बौद्धिक लाभ और परम लाभ पहुँचाने की व्यवस्था के उत्सवों का नाम है दीपावली उत्सव, पर्वों का झुमका। धनतेरस, नरक चतुर्दशी, दिवाली, नूतन वर्ष, भाईदूज - इन पाँच पर्वों का पुंज है दीपावली पर्व।

धनतेरस

'स्कंद पुराण' में आता है कि धनतेरस को दीपदान करनेवाला अकाल मृत्यु से पार हो जाता है। धनतेरस को बाहर की लक्ष्मी का पूजन धन, सुख-शांति व आंतरिक प्रीति देता है। जो भगवान की प्राप्ति में, नारायण में विश्रांति के काम आये वह धन व्यक्ति को अकाल सुख में, अकाल पुरुष में ले जाता है, फिर वह चाहे रुपये-पैसों का धन हो, चाहे गौ-धन हो, गजधन हो, बुद्धिधन हो या लोक-सम्पर्क धन हो।

धनतेरस का सत्संग कहता है कि आप अपने प्रकाश में जियो, अपनी सूझबूझ में जियो, अपना हौसला बुलंद करो। 'कोई मित्र आकर रक्षा करेगा, कोई पति या पत्नी अथवा मित्र आकर सँभालेगा' - ऐसा विचार नहीं करो। सारे ब्रह्मांडों को जो सँभाल रहा है वही सबका आत्मस्वरूप है। धनतेरस को इस आत्मधन का चिंतन करें। आत्मसुख के लिए अंतरंग साधना है। तुम धनतेरस को दीये जलाओगे... तुम भले बाहर से थोड़े सुखी हो, तुमसे ज्यादा तो पतंगे भी सुख मनायेंगे लेकिन थोड़ी देर में फड़फड़ाकर जल-तप के मर जायेंगे।

ऐसा कोई सुख भोग नहीं,
जिसके पीछे दुःख रोग नहीं।
भोगी बन सब पछताते हैं,
इसको सब कोई क्या जाने ।।

देख के, सूँघ के, खा के मजा लेना, काम-विकार से मजा लेना - यह सब पतंगे जैसों का रास्ता है। अपने-आपमें, परमात्मसुख में तृप्ति पाना, सुख-दुःख में सम रहना, ज्ञान का दीया जलाना - यह वास्तविक धनतेरस, आध्यात्मिक धनतेरस है।

नरक चतुर्दशी

काली चौदस की रात, कालरात्रि साधकों के लिए तपस्या और मंत्रसिद्धि का अवसर प्रदान करनेवाली है। इस रात्रि का जागरण और जप चित्शक्ति को परमात्मा में ले जाने में बड़ी मदद करते हैं।

१६ हजार कन्याओं को नरकासुर ने अपने नियंत्रण में रखा था। राजाओं की प्रार्थना से श्रीकृष्ण ने इस
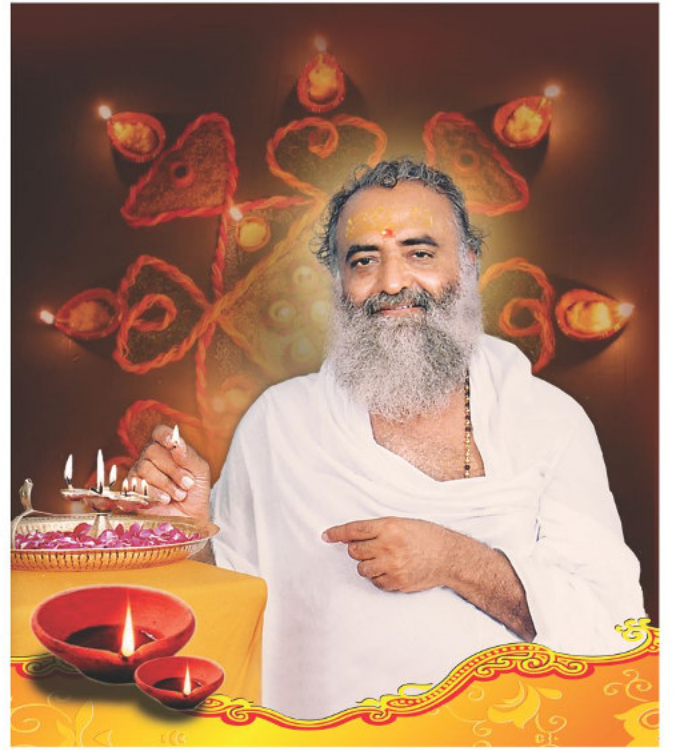
दिन कन्याओं को मुक्त किया और नरकासुर को परलोक भेज दिया। ऐसे ही नरकासुर जैसा अहं परलोक पहुँचे और १६ हजार कन्या-सदृश वृत्तियाँ कृष्णस्वरूप आत्मा-परमात्मा में विराम करें तो परम मंगल हो गया।

दीपावली

दीपावली का पर्व तो तमाम जातियों, सम्प्रदायों, लोगों में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। मनुष्य-जीवन की माँग है कि उसे खुशी, प्रकाश, पुष्टि, सहानुभूति और स्नेह चाहिए। दीपावली स्नेह का, पुष्टि का निमित्त उत्पन्न करती है। इस दिन स्वास्थ्यप्रद माल-मिठाई, प्रसाद आदि लेना-देना किया जाता है। प्रकाश की आवश्यकता है तो दीपोत्सव मनाते हैं। जैसे दीप अँधेरी अमावस्या को भी उजला कर देते हैं, ऐसे ही कैसा भी प्रारब्ध हो, ज्ञानयुक्त पुरुषार्थ उस अंधकारमय प्रारब्ध को प्रकाशमय कर देता है।

अगर इन सामाजिक उत्सवों के साथ-साथ इनमें आध्यात्मिकता का रंग भी डाल दें तो चार चाँद लग जायें। दीपावली में ४ काम करने होते हैं। एक तो घर का कचरा निकाल देना होता है; तो आप दुःख, चिंता, भय, शोक, घृणा पैदा करें ऐसे हीनता-दीनता के, हलके विचारों को निकाल दें। दूसरा, नयी चीज लानी होती है तो आप शांति, स्नेह, औदार्य और माधुर्य पैदा करें ऐसे नये विचार अपने चित्त में अधिक भरें। तीसरी बात, दीया जलाया जाता है अर्थात् जो कुछ भी करें, आत्मज्ञान के प्रकाश में करें। काम आ गया, क्रोध, चिंता, भय आ गये लेकिन आये हैं तो अपने आत्मप्रकाश में उनको देखें, उनमें बहें नहीं तो ज्योति से ज्योति जगेगी। जैसे गुरुदेव ने अपने गुरुदेव से आत्मज्योति का प्रकाश पा लिया है, ऐसे हम भी इस दीपावली के बाह्य दीपक तो जलायें लेकिन अंदर का प्रकाशमय दीया जगाने का भी आज से पौरुष करेंगे। कोई भी परिस्थिति आ जाय तो 'यह आयी है, हम इसको देखनेवाले हैं।' - ऐसा विचार करें। परिस्थिति के साथ भले थोड़ी देर मिल जायें लेकिन परिस्थिति तुम्हें दबाये नहीं, आकर्षित न करे। चौथा काम, मिठाई खाते और खिलाते हैं अर्थात् हम प्रसन्न रहें और प्रसन्नता बाँटें। शत्रु को भी टोटे चबवाने की अपेक्षा खीर-खाँड़ खिलाने का विचार करें तो आपके चित्त में मधुरता रहेगी।

लक्ष्मीप्राप्ति हेतु साधना

जो धन चाहते हैं उनको यह मंत्र जपना चाहिए :

ॐ नमो भाग्यलक्ष्म्यै च विद्महे ।
अष्टलक्ष्म्यै च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।

स्थिर लग्न में, स्थिर मुहूर्त में जप धन को स्थिर करता है। दिवाली की रात लक्ष्मीप्राप्ति के लिए स्थिर लग्न माना गया है। लक्ष्मीप्राप्ति के लिए जापक को पश्चिम की तरफ मुँह करके बैठना चाहिए। पश्चिमे च धनागमः।

तेल का दीपक व धूपबत्ती लक्ष्मीजी की बायीं ओर, घी का दीपक दायीं ओर एवं नैवेद्य आगे रखा जाता है। लक्ष्मीजी को तुलसी, मदार (आक) या धतूरे का फूल नहीं चढ़ाना चाहिए, नहीं तो हानि होती है।

दीपावली संदेश

दिवाली की रात को छोटे स्वभाव के लोग पटाखे फोड़कर ही खुश हो जाते हैं। उससे तो प्रदूषण बढ़ता है लेकिन जो समझदार हैं वे पटाखे में ही खुश नहीं हो जाते, वे तो प्रीतिपूर्वक भगवान का भजन-सुमिरन करते हैं।

जो भगवान को प्रीतिपूर्वक भजता है उसको वे बुद्धियोग देते हैं। बुद्धि तो सबके पास है, बुद्धि में भगवत्सुख, भगवत्-शांति का योग देते हैं - 'समय की धारा को जो जानता है वह चैतन्य आत्मा 'मैं' हूँ। सुख-दुःख को, बीमारी-तंदुरुस्ती को जो जानता है वही आत्मा चैतन्य 'मैं' हूँ और परमात्मा का अविनाशी अंश हूँ। ॐ ॐ आनंद... ॐ ॐ शांति... ॐ ॐ माधुर्य...'

नूतन वर्ष

वर्ष प्रतिपदा के दिन सत्संग के विचारों को बार-बार विचारना। भगवन्नाम का आश्रय लेना।

दीपावली की रात्रि को सोते समय यह निश्चय करेंगे कि 'कल का प्रभात हमें मधुर करना है।' वर्ष का प्रथम दिन जिनका हर्ष-उल्लास और आध्यात्मिकता से जाता है, उनका पूरा वर्ष लगभग ऐसा ही बीतता है। सुबह जब उठें तो 'शांति, आनंद, माधुर्य... आधिभौतिक वस्तुओं का, आधिभौतिक शरीर का हम आध्यात्मिकीकरण करेंगे क्योंकि हमें सत्संग मिला है, सत्य का संग मिला है, सत्य एक परमात्मा है। सुख-दुःख आ जाय, मान-अपमान आ जाय, मित्र आ जाय, शत्रु आ जाय, सब बदलनेवाला है लेकिन मेरा चैतन्य आत्मा सदा रहनेवाला है।' - ऐसा चिंतन करें और श्वास अंदर गया 'सोऽ...', बाहर आया 'हम्...', यह हो गया आधिभौतिकता का आध्यात्मिकीकरण, अनित्य शरीर में अपने नित्य आत्मदेव की स्मृति, नश्वर में शाश्वत की यात्रा।

सुबह उठ के बिस्तर पर ही बैठकर थोड़ी देर श्वासोच्छ्वास को गिनना, अपना चित्त प्रसन्न रखना, आनंद उभारना।

भाईदूज

यह भाई-बहन के निर्दोष स्नेह का पर्व है। बहन को सुरक्षा और भाई को शुभ संकल्प मिलते हैं। यमराज ने अपनी बहन यमी से प्रश्न किया : ''बहन ! तू क्या चाहती है ? मुझे अपनी प्रिय बहन की सेवा का मौका चाहिए।''

यमी ने कहा : ''भैया ! आज वर्ष की द्वितीया है। इस दिन भाई बहन के यहाँ आये या बहन भाई के यहाँ पहुँचे और इस दिन जो भाई अपनी बहन के हाथ का बना हुआ भोजन करे वह यमपुरी के पाश से मुक्त हो जाय।''

यमराज प्रसन्न हुए कि ''बहन ! ऐसा ही होगा।''

भैया को भोजन कराना है तो उसमें स्नेह के कण भी जाते हैं। मशीनों द्वारा बने हुए भोजन में और अपने स्नेहियों के द्वारा बने हुए भोजन में बहुत फर्क होता है।

सकल भुवन के गान तुम्हीं हो

सकल भुवन के गान तुम्हीं हो,
सर्वाधार महान तुम्हीं हो।
तुम नास्तिक की प्रकृति शक्ति में,
आस्तिक की श्रद्धेय अस्ति१ में।
ज्ञानी की तत्त्वानुरक्ति में,
आदि मध्य अवसान२ तुम्हीं हो ॥
सर्व रूप में सर्व नाम में,
सर्व काल में सर्व धाम में।
तुम ही गति में तुम विराम में,
शक्तिमान भगवान तुम्हीं हो ॥
तुममें दनुज३ देवगण तुममें,
तुममें पर्वत है तृण तुममें।
तुममें कल्प और क्षण तुममें,
सबके परम स्थान तुम्हीं हो ॥
मानव में सत्कर्म तुम्हीं से,
कर्म विकर्म अकर्म तुम्हीं से।
मिले गुह्यतम मर्म तुम्हीं से,
सबको देते ज्ञान तुम्हीं हो ॥
तुम अमान के मानी के भी,
ज्ञानी के अज्ञानी के भी।
तुम दरिद्र के दानी के भी,
आश्रय एक समान तुम्हीं हो ॥
तुममें जीवन मरण तुम्हीं में,
सबका है निस्तरण४ तुम्हीं में।
पथिक पा रहा शरण तुम्हीं में,
करते शांति प्रदान तुम्हीं हो ॥

- संत पथिकजी

१. सत्ता २. अंत ३. असुर ४. पार उतरना

खोजें और ज्ञान बढ़ायें

म	श	ट	मा	पं	च	द	शी	दु	य	थ	अ
नि	व	क	च	द	ह	ड	प	स	र	ल	नु
र्वा	श	दा	त्त	क	नी	सं	क्रां	ति	ध	च	रा
ण	ऐ	द्व	आ	त्र	ति	उ	द	आ	ई	श	ग
प्र	वि	श	रा	व	श	कु	य	प्ति	ष्ठ	णे	सा
क	हा	व	लो	ता	त	ली	हो	गा	पः	ग	ग
र	शि	बा	श	तां	क	वे	पा	गु	म	श्रे	र
ण	मे	ड	पे	भ	क्त	मा	ल	क	र्थ	सा	चं
त्त	नं	धा	य	स्त्र	ली	के	मी	र	क्षि	पा	ड
ज	वा	चाँ	ग	दे	व	पैं	स	ठी	ल	ल	ग
ता	दः	म	का	र्व	स	ति	श	त	स	ट	घ
गी	त	ज	पु	जी	सा	हि	ब	र	बु	प	र

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर वर्ग-पहेली में से खोजिये :

(१) ब्रह्मनिष्ठ स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज ने किस ग्रंथ का श्रवण कराते-कराते पूज्य बापूजी पर पूर्ण कृपा बरसायी थी और पूज्यश्री को आत्मसाक्षात्कार हो गया था ?

(२) श्री वसिष्ठजी द्वारा श्रीरामजी को दिये गये उपदेश से बना जो ग्रंथ मोक्षमार्गी साधकों के लिए अमृततुल्य है, उसके अंतिम प्रकरण का नाम क्या है ?

(३) भर्तृहरिजी ने अपने किस ग्रंथ में लिखा है : 'जब मैं थोड़ा जानता था, तब मुझे लगता था कि मैं सब कुछ जानता हूँ। जब ज्ञानवान लोगों की संगति से मैंने कुछ-कुछ जाना, तब पता चला कि मैं मूर्ख था। तभी मेरा घमंड मिट गया।'

(४) अचल निष्ठावान सत्शिष्य धर्मदासजी को सद्गुरु कबीरजी ने जो ज्ञानोपदेश दिया वह किस ग्रंथ के नाम से प्रसिद्ध है ?

(५) गुरु नानकजी के श्रीमुख से उच्चारित की गयी प्रथम वाणी कौन-सी है ?

(६) चौदह सौ वर्ष के चाँगदेवजी को संत ज्ञानेश्वरजी ने जो ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया वह किस नाम से प्रसिद्ध है ?

(७) संत अग्रदासजी की कृपा से अनाथ सूरदास बालक में से संतत्व को उपलब्ध हुए नाभाजी महाराज ने दुनिया को कौन-सा सुप्रसिद्ध ग्रंथ प्रदान किया ?

(पृष्ठ १९ से ' मामूली-सी प्यास ...' का शेष) उसका जिज्ञासु था, वह बोला कि ''हम पता लगा के छोड़ेंगे।'' और वह मेज पर कागज रख के कलम हाथ में लेकर बैठ गया। उसने जीभ पर

वह जहर डाला और कलम से लिखने की कोशिश की। उसको केवल एक शब्द में उसका स्वाद लिखना था और लिखते-लिखते वह मर गया। एक जहर के स्वाद का पता लगाने के लिए एक जिज्ञासु मरने तक को तैयार हो जाता है और हम लोग बिना कुछ सहन किये पता लगाना चाहते हैं ब्रह्म का !

मैं भोरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ।

तो उसके लिए और कामों की ओर से मन हटाना पड़ता है। जो सुख-दुःख आये उसको सहना पड़ता है और 'हमको सफलता मिलेगी।' इस पर श्रद्धा होनी चाहिए। 'सचमुच वह वस्तु (ब्रह्म) है।' यह विश्वास होना चाहिए। अब 'ब्रह्म है कि नहीं है ?' यही संशय है तो उसके जीवन में असत्त्वापादक आवरण[१] है। तो उस आवरण को मिटाकर अभानापादक आवरण[२] को भी मिटाने के लिए मन में इतनी बड़ी तीव्रता चाहिए और मन उसमें ऐसा एकाग्र होना चाहिए कि दुनिया दिखे ही नहीं। (क्रमशः)

१. यह पहला आवरण है, जिससे ब्रह्म के अस्तित्व में दृढ़ विश्वास नहीं होता।

२. ब्रह्म के अस्तित्व में विश्वास होने के बाद यह दूसरा आवरण है, जिससे ब्रह्म का भान बना नहीं रहता।

मामूली-सी प्यास सब भोगों को नरक बनाती है तो...

महाकवि कालिदासजी को एक दिन खाने को तो मिला लेकिन कुछ पीने को नहीं मिला, प्यासे रह गये तो राजा भोज ने गुप्तचरों से उनका पता लगवाया तथा बुलवाया। बड़े विशाल महल में अच्छा-सा पलंग बिछाकर खूब महक-सुगंध करके उनको बिठा दिया गया और कहा : ''महाराज ! अब आराम से आप यहीं शयन कीजिये।''
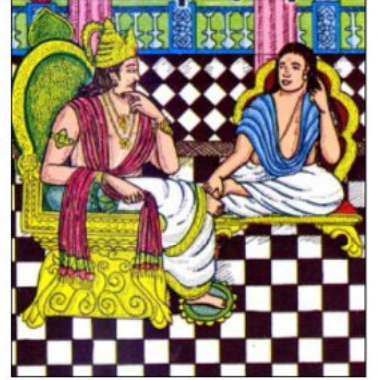
वे बोले : ''बाबा ! पहले कुछ पीने को दो।'' वहाँ नाच-गान की भी व्यवस्था की गयी थी, व्यंजन भी रखे हुए थे एवं उन्हें हीरे-मोतियों की माला भी पहनायी गयी और बोले : ''बस, अब यहीं रहो।''

उन्होंने कहा : ''पहले हमको पानी पीने को दो, बाद में यह सब काम करना। पानी के बिना यह सब हमको नरक के समान मालूम पड़ता है। गला सूख रहा है।''

जैसे प्यासे व्यक्ति को किसी भोग-सामग्री में रुचि नहीं होती, ऐसे ही जिनके मन में सच्ची जिज्ञासा का उदय हो जाता है उनको संसार के भोगों में रुचि नहीं होती, उनको तो आत्मा-परमात्मा का ज्ञान चाहिए। प्रभु-प्यास, आत्मसुख, आत्मलाभ, आत्मज्ञान की पूर्ण प्यास लगती है तो संसार क्या, स्वर्ग के भी फँसानेवाले सुख-भोग में व्यक्ति फिसलेगा नहीं। जीवन्मुक्ति दिलानेवाले आत्मसुख का प्यासा अपने आत्मा-परमात्मा में ही, विभु-व्यापक में ही तृप्त होता है। पूर्ण गुरु किरपा मिली...

प्यासा व्यक्ति यह नहीं ढूँढ़ेगा कि यहाँ खाने के लिए लड्डू कितने रखे हैं ? नहीं, वह तो पानी ढूँढ़ेगा। तो अपने-आप ही शब्द, स्पर्श, रूप, रस, धन, स्त्री से वैराग्य हो जाता है। वह कहेगा कि 'कई हजार रुपये ले लो और इस समय पानी पिला दो, नहीं तो हम मर जायेंगे।' तो एक मामूली-सी प्यास से संसार के भोगों से वैराग्य हो जाता है फिर किसीको ज्ञान की प्यास लगे और उसको वैराग्य न हो तो यही समझना चाहिए कि उसको परमात्म-ज्ञान की प्यास ही नहीं लगी है। प्यास का यह लक्षण ही है कि पानी के सिवाय और सब वस्तुओं से वैराग्य हो जाय। वैराग्य के और भी लक्षण हैं।

तीव्र प्यास लगी हो तो व्यक्ति उस समय किसी पर गुस्सा करेगा कि गिड़गिड़ा के पानी माँगेगा ? और यदि उस समय वह किसीसे कहे : ''ऐ, पानी दो, नहीं तो हम तुम्हें डंडा मारेंगे।'' तो वह भाग जायेगा कि पानी देगा ? तो उस समय क्रोध से काम नहीं चलेगा, मन में शांति चाहिए। जैसे कि किसी वैज्ञानिक को जब किसी भौतिक तत्त्व का पता लगाना होता है और उस समय वह गोद में अपनी स्त्री को बिठा ले या दुश्मन को गाली देने लगे और कहे कि 'हम इस भौतिक तत्त्व का पता लगाते हैं।' तो लगेगा ? कुछ नहीं लगेगा। तो भौतिक तत्त्व का पता लगाने के लिए भी काम-क्रोध को शांत करना पड़ता है, इन्द्रियों की चंचलता मिटानी पड़ती है, दूसरे कामों की ओर से अपने मन को हटाना पड़ता है। जो कुछ उस समय गर्मी-सर्दी आये उसको सहना पड़ता है। पोटैशियम सायनाइड नाम के जहर का स्वाद कड़वा है कि मीठा है या नमकीन है, यह किसीको मालूम नहीं था। तो एक जो

(शेष पृष्ठ १८ पर)

श्रीमद्भगवद्गीता

एक परिचय

- पूज्य बापूजी

(गतांक से आगे)
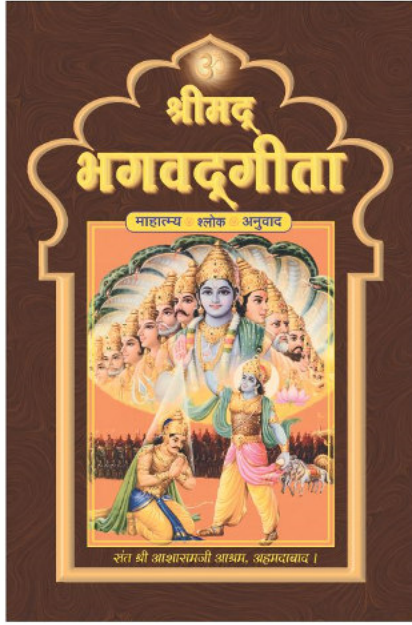
श्रीमद्भगवद्गीता का सातवाँ अध्याय है :

ज्ञानविज्ञानयोग

यह अध्याय पूर्ण ज्ञान की बात करता है। भगवान कहते हैं :

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युंजन्मदाश्रयः।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥

'हे पार्थ ! अनन्य प्रेम से मुझमें आसक्तचित्त तथा अनन्यभाव से मेरे परायण होकर योग में लगा हुआ तू जिस प्रकार से सम्पूर्ण विभूति, बल, ऐश्वर्यादि गुणों से युक्त, सबके आत्मरूप मुझको संशयरहित जानेगा, उसको सुन।' (गीता : ७.१)

कई लोग योग करते हैं सामर्थ्य, ऋद्धि-सिद्धि के लिए और कोई योग्यता बढ़ाने के लिए लेकिन भगवान में जिनका मन आसक्त है, जो भगवान की प्रीति के लिए योग करते हैं उनको भगवान का पूर्ण ज्ञान मिलता है।

पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान।...

ज्ञानविज्ञानयोग - परमात्म-विषय का ज्ञान और उस विषय का अनुभव करने की पद्धति को यहाँ विज्ञान कहा है। भगवान कहते हैं :

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥

'मैं तेरे लिए इस विज्ञानसहित तत्त्वज्ञान को सम्पूर्णतया कहूँगा, जिसको जानकर संसार में फिर और कुछ भी जाननेयोग्य शेष नहीं रह जाता।' (गीता : ७.२)

विज्ञानसहित ज्ञान का विषय और सम्पूर्ण पदार्थों में कारणरूप व्यापक भगवान का वर्णन करते हुए कहा है :

मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥

'हे धनंजय ! मुझसे भिन्न दूसरा कोई भी परम कारण नहीं है। यह सम्पूर्ण जगत सूत्र में सूत्र के मणियों के सदृश मुझमें गुँथा हुआ है।' (गीता : ७.७)

भगवान कहते हैं कि माया में फँसे हुए मूढ़ जन मेरे उस सर्वव्यापक रूप को नहीं जानते हैं लेकिन जो मेरी शरण में आता है, निरंतर मेरे को ही भजता है, वह संसार से तर जाता है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

(गीता : ७.१४)

ऐसा सुगम उपाय होने पर भी माया द्वारा जिनका ज्ञान हरा गया है और जो आसुरी स्वभाव को धारण किये हुए हैं, ऐसे मनुष्यों में नीच और दूषित कर्म करनेवाले मूढ़ लोग मुझको नहीं भजते हैं।

इस प्रकार यहाँ आसुरी भाव को प्राप्त हुए पुरुष की निंदा और भगवद्भक्तों की प्रशंसा की गयी है। देवताओं की उपासना से प्राप्त होनेवाले फल नाशवान हैं। अतः उसमें लगे हुए पुरुष भगवद्भक्ति से होनेवाले विशुद्ध आनंद के लाभ से वंचित रह जाते हैं।

गीता का ८वाँ अध्याय है :

अक्षरब्रह्मयोग

यह जो कुछ आँखों से दिखता है वह क्षर है - नाश होनेवाला है लेकिन जिसकी सत्ता से दिखता है वह अक्षर है, अविनाशी है। जैसे - बालकरूपी फूल पाँच भूतों से खिला। यह समाजरूपी पुष्पों की माला पाँच भूतों की है और यह फिर पाँच भूतों की तरफ ही जा रही है। व्यक्ति जब मरता है तो उसका जल का भाग जल में चला जाता है। उसके शरीर में जो अग्नि तत्त्व है वह महाअग्नि में मिल जाता है। उसमें जो वायु है वह वायु में मिल जाती है। उसके अंदर जो आकाश है वह आकाश में मिल जाता है और जो पृथ्वी तत्त्व है वह राख व हड्डियों के रूप में रह जाता है, उसको बहाने के लिए गंगा में ले जाते हैं अथवा तो कब्र में गाड़ देते हैं, तब भी शरीर के पाँच भूत पाँच महाभूतों से मिलने के लिए चले जाते हैं।

ममता होती है तो माँ कहती है : 'मेरा बेटा है।' दादा कहता है : 'मेरा पोता है।' मामा कहता है : 'मेरा भानजा है।' चाचा कहता है : 'मेरा भतीजा है।' वह बड़ा होता है तो लोग बोलते हैं कि 'यह हमारा दोस्त है।', 'मेरा दुश्मन है।', 'मेरा ग्राहक है।', 'यह मेरा सेठ है, मेरा मैनेजर है...' लेकिन यह फूल जिसका है उसकी तरफ ही यात्रा कर रहा है, बाकी बोलनेवालों की कल्पना ही उनके पास रहती है और वे कल्पनावाले भी ऐसे ही हो जाते हैं।

मन तू ज्योतिस्वरूप, अपना मूल पिछान।

तू ज्योतिस्वरूप है, तू जाननेवाला है, तू अक्षर (अविनाशी) है और यह शरीर क्षर (नाशवान) है। हम क्षर को मैं मानते हैं, अक्षर का पता नहीं इसलिए मुसीबतें सहते हैं। मुसीबत न भगवान ने बनायी न माया ने बनायी और न किसी भूत-प्रेत ने बनायी; मुसीबत बनायी अज्ञान ने। अज्ञान मिटता है वेदांत-ज्ञान से।

तुम्हारा शरीर और वस्तुओं का व्यवहार क्षर है लेकिन इस क्षर का मूल तत्त्व अक्षर है, उसको पाओ, उसको जानो, उस पर दृष्टि रखो।

इस जगत की सब चीजें तो क्षर हैं किंतु ब्रह्म-परमात्मा अक्षर है, अविनाशी है। यह बताते हुए इस अध्याय में ब्रह्म, अध्यात्म और कर्म के विषय में प्रश्नोत्तर किये गये हैं। इसमें शुक्ल और कृष्ण पक्ष में जीव की गति का वर्णन आता है।

इसमें यह सिद्धांत पेश किया गया है कि जो विचार मृत्यु के समय स्पष्ट और गहराई से उठा हुआ हो, वही विचार आगे के जन्म में सबसे बलवान साबित होता है। इस जन्म में पायी हुई धरोहर लेकर मरण की लम्बी नींद से उठ के फिर से दूसरे जन्म में अपनी यात्रा शुरू होती है। इस जन्म का अंत अगले जन्म की शुरुआत होती है। इसलिए हमेशा मरण का स्मरण रखकर जीवन का व्यवहार चलाओ। और सब तो अनिश्चित है लेकिन मरण निश्चित है। प्रतिदिन सूर्य अस्त होता है और आयुष्य क्षीण होता जाता है। एक-एक दिन करके आयु खत्म होती जाती है लेकिन मनुष्य को उसका विचार नहीं आता है। भगवान कहते हैं :

तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन।

'हे अर्जुन ! तू सब काल में समबुद्धिरूप योग से युक्त हो अर्थात् निरंतर मेरी प्राप्ति के लिए साधन करनेवाला हो।' (गीता : ८.२७) (क्रमशः)

गौसेवा के आदर्श : पूज्य बापूजी

(गोपाष्टमी : ८ नवम्बर)

गायों व गरीबों को दिया नवजीवन

पूज्य बापूजी का गायों के प्रति प्रेम अभूतपूर्व है। उनके संरक्षण व संवर्धन के लिए पूज्यश्री द्वारा किये गये सफल प्रयासों से गायों को नवजीवन मिला है। निवाई (राजस्थान) के बंजर इलाके में बापूजी ने गौशाला की स्थापना कराके ऐसे इलाके को भी हरा-भरा कर दिया है।

इस गौशाला के शुभारम्भ का इतिहास बड़ा प्रेरणाप्रद है। सन् २००० में राजस्थान में पड़े भीषण अकाल के कारण लगभग डेढ़ हजार गायें कत्लखाने ले जायी जा रही थीं। वहाँ के साधकों ने जब पूज्य बापूजी को इस बात की जानकारी दी तो पूज्यश्री ने उन गायों को छुड़वाया तथा उनकी सेवा के लिए १४ जून २००० को एक गौशाला का शुभारम्भ करवाया। यहाँ पर उन्हें चारा-पानी तथा चिकित्सा-सुविधा उपलब्ध करायी गयी।

उस समय निवाई में पानी एवं घास के अभाव में गाँववाले गायों को छोड़ देते थे तो कत्लखानेवाले उन्हें ले जाते थे। यह पता चला तो बापूजी का हृदय भर आया, बोले : ''एक भी गाय कत्लखाने नहीं जानी चाहिए।''

पूज्यश्री के निर्देशानुसार गायों को कसाइयों से मुक्त करवाकर उनके लिए बाड़ा बनवाया गया। धीरे-धीरे वहाँ की गौशाला में ५००० से भी ज्यादा गायें हो गयीं।

बापूजी गायों का खूब खयाल रखते-रखवाते थे। पूज्यश्री बोलते थे : ''गायों को तकलीफ न हो इसका ध्यान रखना।''

वहाँ इतनी गायों को रखने की जगह नहीं थी। ऊपर से गर्मियों में गाँववाले अपनी गायें भी ले आते थे। पूज्यश्री के पास समाचार पहुँचा तो आपश्री बोले : ''कुछ भी करके गायों को रखो, सेवा और बढ़ाओ।''

गर्मियों में वहाँ गायों के लिए पीने का पानी तक नहीं मिल पाता था तो शहर से पानी के टैंकर मँगवाते थे। एक दिन में ३-४ टैंकर पानी लग जाता था। वहाँ हरी घास नहीं मिलती थी फिर भी बापूजी बोलते : ''हफ्ता या

१५ दिन में हरी घास गायों को मिलनी ही चाहिए, कहीं-न-कहीं से व्यवस्था करो।''

हरी घास की व्यवस्था की जाती थी। बापूजी बहुत व्यस्तता में भी साल में १-२ बार निवाई में जरूर रुकते थे। पूज्यश्री अपने हाथों से गायों को चारा खिलाते और सभी बाड़ों में जा के देखते, दुबली-पतली गायों को बाहर निकलवाकर बोलते : ''इनका इलाज कराओ। बूढ़ी व जवान गायों की अलग और इनके बछड़ों की अलग व्यवस्था करो।''

फिर बापूजी ने लुधियाना, श्योपुर (म.प्र.), दिल्ली, अहमदाबाद आदि विभिन्न स्थानों पर गौशालाएँ खुलवायीं और निवाई की कुछ गायों को सभी जगह भिजवाया। अभी इन गौशालाओं में कुल ८००० गायें हैं।

निवाई आश्रम में ट्यूब वेल खुदवाया गया और भगवत्कृपा से पानी का अच्छा स्रोत निकला। वहाँ घास भी लगने लगी। गायों को हरी घास, दलिया, कपास के बीज, ज्वार-बाजरा, मूँग का चूरा आदि पोषक आहार एवं ऋतु-अनुकूल खुराक दी जाती है। उनके रहने के लिए बाड़े आदि की अच्छी व्यवस्था हो गयी।

गरीबों का भी रखते हैं खयाल

पूज्य बापूजी गरीबों का भी खयाल रखते हैं। आसपास के मजदूर जो ५-५ कि.मी. से पैदल आते थे, उनके पास टोपी-चप्पल नहीं, रहने के लिए घर नहीं। बापूजी उन्हें जूते, टोपियाँ आदि खुद बाँटते-बँटवाते थे। इतना ही नहीं, पूज्यश्री ने उन गरीबों को मकान भी बनवाकर दिये।

पहले वहाँ इतनी बदहाली थी कि लोग आत्महत्या करने की कगार पर आ जाते थे। बापूजी ने गायों के माध्यम से गरीबों के लिए रोजगार का मार्ग खोल दिया। पूज्यश्री ने गोझरण इकट्ठा करवाना चालू करवाया और उसका अर्क व गोझरण वटी बनवायी। थोड़े खर्च में लोगों की बहुत सारी बीमारियाँ अलविदा हो जातीं, गरीब स्वस्थ हो जाते और उनको रोजगार भी मिलता। गोझरण अर्क से देश-विदेश में कइयों की असाध्य बीमारियाँ जैसे कैंसर, टी.बी. आदि मिट गयीं।

गोझरण इकट्ठा करने के लिए गरीबों को पैसे दिये जाते हैं। बाद में गौचंदन धूपबत्ती बनना भी चालू हो गया तो गोबर इकट्ठा करने व धूपबत्ती बनाने का भी उनको रोजगार मिलने लगा। गरीबों को १५०-२०० रुपये प्रतिदिन के मिल जाते। हर व्यक्ति को उसकी उम्र की अनुकूलता अनुसार काम मिलता है।

बापूजी एक बार निवाई पधारे तब सभी मजदूरों को पास में बुला-बुला के उनकी पीठ थपथपायी और पूछा : ''तुमको कितना पैसा मिलता है, ये लोग खयाल रखते हैं ?'' इस प्रेम व अपनत्व से उन गरीब मजदूरों की आँखों से प्रेमाश्रु छलक पड़े थे।

आश्रम में आकर कीर्तन-भजन करने से गरीबों का जीवन उन्नत व खुशहाल हो गया। बापूजी ने उनको यहाँ तक बोला : ''आओ, यहाँ ध्यान-भजन करो, भोजन करो और रोज ५० रुपये भी ले जाओ।''

ऐसे मनायी जाती है गोपाष्टमी

जीवमात्र के परम हितैषी पूज्य बापूजी के द्वारा वर्षभर गायों के लिए कुछ-न-कुछ सेवाकार्य चलते ही रहते हैं तथा गौसेवा हेतु अपने करोड़ों शिष्यों एवं समाज को प्रेरित करनेवाले उपदेश पूज्यश्री के प्रवचनों का अभिन्न अंग रहे हैं। बापूजी के निर्देशानुसार गोपाष्टमी व अन्य पर्वों पर गौशालाओं में तथा गाँवों में घर-घर जाकर गायों को उनका प्रिय व पौष्टिक आहार खिलाया जाता है। उनकी सेवा, पूजा व परिक्रमा कर चरणरज सिर पर लगायी जाती है।

(गोपाष्टमी विषयक अधिक जानकारी हेतु 'ऋषि प्रसाद' का नवम्बर २०१५ अथवा नवम्बर २०१२ का अंक पढ़ें।)
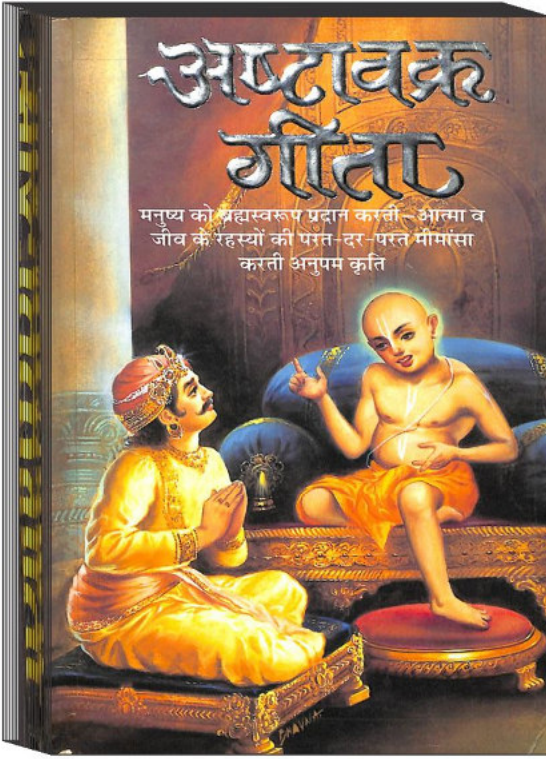
अष्टावक्र गीता

परास्त होकर बंदी का जल-समाधि लेना

अष्टावक्रजी की वाणी में प्रभाव था, फिर भी राजा जनक ने कहा : ''बेटा ! पहले मैं जो प्रश्न करूँ उनके उत्तर दे तो मैं समझूँगा कि तू बंदी के साथ शास्त्रार्थ कर सकेगा।

ऐसा कौन है जिसके १२ अंश, २४ पर्व व ३६० अरे (चक्र की नाभि व परिधि के बीच की लकड़ियाँ) हैं और वह ३ करवटें बदलता है ?''

अष्टावक्रजी : ''वह कालचक्र है, जो सर्दी, गर्मी और बारिश का मौसम - ऐसे ३ करवटें बदलता है। उसके १२ अमावस्या और १२ पूर्णिमारूपी २४ पर्व, ऋतुरूप ६ नाभि, मासरूप १२ अंश, दिनरूप ३६० अरे हैं। वह निरंतर घूमनेवाला संवत्सररूप कालचक्र है।''

राजा जनक ने दूसरा प्रश्न किया : ''ऐसा कौन-सा प्राणी है जो सोते वक्त भी आँखें खुली रखता है ? ऐसा कौन है जो जन्म लेकर भी चलता नहीं है ? जिसको हृदय नहीं होता वह कौन है ? ऐसा क्या है जो वेग से बढ़ता है ?''

अष्टावक्रजी : ''ये तो कई प्रश्न हैं राजन् ! सुनिये। मछली सोते वक्त भी आँखें बंद नहीं करती। अंडा जन्म लेकर भी नहीं चलता। पत्थर को हृदय नहीं होता और नदी वेग से बढ़ती है।''

राजा जनक आश्चर्यचकित हो गये। जनक ने कहा : ''आप तो साक्षात् देव हैं। बंदी से शास्त्रार्थ करने में समर्थ हैं। आप बंदी से शास्त्रार्थ कर सकते हैं।''

अष्टावक्र मुनि खड़े हुए और बंदी के पास जाकर कहने लगे : ''बंदी ! तुम आखिरी श्वास गिन लो। अंतिम बार अपने इष्टदेव का स्मरण कर लो। आज तक तुमने कइयों को हराया है लेकिन आज हारने की बारी तुम्हारी है।''

ऐसा कहकर अष्टावक्रजी ने बंदी का मनोबल हर लिया। मनोबल टूटने पर आदमी को कुछ सूझता नहीं है।

सत्य के राही को, परमात्म-मार्ग के पथिक को अपना मनोबल कभी टूटने नहीं देना चाहिए, चाहे सारी दुनिया ही उसके विरोध में एक तरफ खड़ी क्यों न हो जाय।

अष्टावक्रजी के साथ शास्त्रार्थ में बंदी की हार हुई। अष्टावक्र मुनि ने राजा जनक से कहा : ''राजन् ! अब किसकी आज्ञा की राह देख रहे हैं ? बंदी के साथ शास्त्रार्थ में जो ब्राह्मण पराजित हुए हैं उनको बंदी ने समुद्र में डुबा दिया है। अब बंदी को भी समुद्र में डुबा देना चाहिए।''

इस पर बंदी ने कहा : ''हे राजा जनक ! मैं जल-समाधि लेने को तैयार हूँ लेकिन इससे पहले मैं यहाँ अपने आने का प्रयोजन बताना चाहता हूँ। मैं वरुणदेव का पुत्र हूँ। वरुणलोक में मेरे पिता ने आपके इस यज्ञ के समान ही १२ वर्षों में पूर्ण होनेवाले ज्ञानयज्ञ का आयोजन किया था। उसमें विद्वान ब्राह्मणों की जरूरत थी और ऐसे विद्वान ब्राह्मण आपके राज्य में ही मिल सकते थे इसलिए उन्होंने मुझे यहाँ भेजा। शास्त्रार्थ में पराजित सभी ब्राह्मणों को मैंने समुद्र में डुबाने के बहाने वरुणलोक में भेजा है। अब मेरे पिता का ज्ञानयज्ञ पूरा हो गया है। वरुणलोक में भेजे गये सभी ब्राह्मण समुद्र-जल से बाहर आ जायेंगे।''

जनक को आश्चर्य हुआ ! उनकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा। बंदी के द्वारा जल में डुबोये हुए सभी ब्राह्मण सहसा राजा जनक के समीप प्रकट हो गये, तब राजा की आज्ञा लेकर बंदी स्वयं ही समुद्र के जल में समा गया। अष्टावक्रजी ने कहोड मुनि को प्रणाम किया।

कहोड मुनि ने कहा : ''पुत्र हो तो ऐसा हो ! जो कार्य मैं न कर सका वह मेरे पुत्र ने कर दिखाया। ऐसा ज्ञानी पुत्र कुल का तो उद्धार करता ही है, साथ में लोगों का भी उद्धार करता है।''

तदनंतर राजा जनक ने अष्टावक्रजी का सम्मान करते हुए उन्हें अपने सिंहासन पर बिठाया और स्वयं उनके चरणों में बैठकर आत्मज्ञान के उपदेश की प्रार्थना की। तब बारह वर्ष के बालक अष्टावक्रजी गुरु के रूप में अपने शिष्य राजा जनक की शंकाओं का समाधान करते हैं। और वही जनक-अष्टावक्र संवाद 'अष्टावक्र गीता' के नाम से प्रसिद्ध है।

तत्पश्चात् अष्टावक्रजी अपने पिता एवं मामा के साथ अपने आश्रम लौटे। उस समय कहोड मुनि ने अष्टावक्रजी से कहा : ''बेटा ! तुम शीघ्र ही इस समंगा नदी में स्नान करके आओ।''

समंगा नदी के जल का स्पर्श होते ही तत्काल उनके सब अंग सीधे हो गये। इतना ही नहीं, इससे समंगा अर्थात् सम-अंगा नदी भी पुण्यमयी हो गयी। उसमें स्नान करनेवाला मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है ऐसा शास्त्रों में आता है। (क्रमशः)

चेतन व्यक्ति की खोज में...

एथेंसवासी संत डायोजिनीस एक दोपहर को हाथ में जलती लालटेन लेकर जमीन पर कुछ ढूँढ़ने का उपक्रम करने लगे। लोग बहुत चकित होने लगे। डायोजिनीस देखते, रुकते फिर देखते और चल देते।

एक व्यक्ति ने इन विद्वान दार्शनिक से हिम्मत करके पूछा : ''क्या तलाश रहे हैं ? धूप व रोशनी की कोई कमी नहीं, फिर भी लालटेन जला रखी है। कारण ?''

संत ने उस आदमी पर नजर दौड़ायी। साथ खड़े अनेक लोगों के भी चेहरों पर जिज्ञासा व विस्मय देखा। फिर बोले : ''मेरे भाई ! मुझे एक चेतन प्राणी की तलाश है।''

दूसरे व्यक्ति ने पूछा : ''तो क्या हम जड़ हैं, चेतन नहीं ?''

''हाँ, आप चेतन होकर भी अचेतन हैं। मुझे ऐसा व्यक्ति चाहिए जो चेतन होकर चेतन ही हो, जड़ न हो।''

कुछ रुककर संत ने कहा : ''मैं जानता हूँ कि आप युवक, नर-नारी, वृद्ध - सभी कोई-न-कोई काम-धंधा कर अपनी आजीविका कमा रहे होंगे। कोई पैसेवाला हो गया, कोई गरीब रह गया। फिर भी आप सबमें कोई चेतन नहीं नजर आ रहा। आप जड़ को ही अपना सब कुछ मान बैठे हैं इसीलिए स्वयं भी जड़ या अचेतन हो गये हैं। आप अपने-अपने कामों में लगे दुकानदार, व्यापारी, नौकर, किसान या वाहन-चालक ही बने रहना चाहते हैं। ऐसा बने रहना सच नहीं, ठीक नहीं, शाश्वत नहीं। इसे बदलना सीखो। आपका चेतन आत्मा तीनों कालों में शरीर, कर्म व विचार से निर्विकार रहता है। यही शाश्वत द्रव्य है। यही वह चीज है जो सदा चेतन है। याद रखना, आत्मा कभी अनात्मा नहीं होता। मेरे प्यारे भाइयो ! जड़ बनकर घर-गृहस्थी चलाते रहना काफी नहीं। अपने चेतनत्व को जानने का सार्थक प्रयत्न करो। आत्मा को पहचानो।''

लोग गद्गद हो गये कि हमारी समझ को उन्नत बनाने के लिए संत कैसी-कैसी लीला करते हैं !
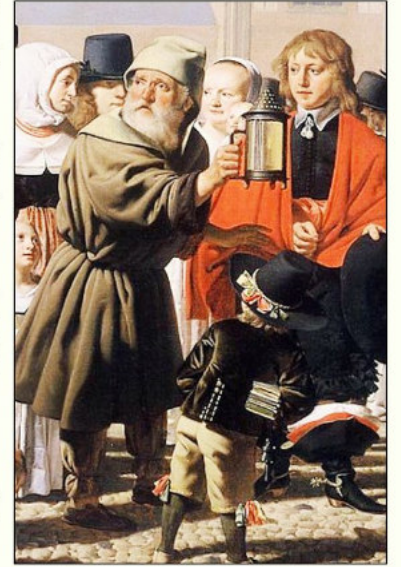
जब रामजी को सूझा विनोद...

जब भगवान श्रीरामजी पिता की आज्ञा से वनवास जाने की तैयारी में थे, तब उन्होंने ऋषि-मुनियों का दान-दक्षिणादि से सम्मान-पूजन किया तथा अपने सभी आश्रितों, सेवकों को, जिनका गला आँसुओं से रुँधा हुआ था, बुलाकर एक-एक को चौदह वर्षों तक जीविका चलाने योग्य बहुत-सा द्रव्य प्रदान किया।

उस समय वहाँ कोई भी ब्राह्मण, सुहृद, सेवक, दरिद्र, दीन-दुःखी अथवा भिक्षुक ऐसा नहीं था जिसे भगवान श्रीरामजी ने यथायोग्य दान एवं आदर-सत्कार से तृप्त न किया हो।

उन्हीं दिनों अयोध्या के पास के वन में त्रिजट नामक एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी जीविका का पर्याप्त साधन नहीं था इसलिए उपवास आदि के कारण उनके शरीर का रंग पीला पड़ गया था। वे वयोवृद्ध तो थे परंतु भृगु और अंगिरा ऋषि के समान तेजस्वी थे। उनकी पत्नी तरुणी थी और बच्चे अनेक थे। धन-वितरण की बात सुनकर उनकी पत्नी ने उन्हें श्रीरामजी के पास भेजा।

त्रिजट ने श्रीरामजी से कहा : ''महाबली राजकुमार ! मैं निर्धन हूँ व मेरे बहुत-से पुत्र हैं। जीविका नष्ट हो जाने से मैं सदा वन में ही रहता हूँ। आप मुझ पर कृपादृष्टि कीजिये।''

श्रीरामजी ने विनोदपूर्वक कहा : ''ब्रह्मन् ! मेरे पास असंख्य गायें हैं। इनमें से एक सहस्र का भी मैंने अभी तक किसीको दान नहीं दिया है। आप अपना डंडा जितनी दूर फेंक सकेंगे, वहाँ तक की सारी गायें आपको मिल जायेंगी।''

त्रिजट ब्राह्मण ने धोती के पल्ले को सब ओर से कमर में लपेट लिया और पूरी शक्ति लगाकर डंडे को बड़े वेग से घुमाकर फेंका।

वह डंडा सरयू नदी के उस पार जाकर हजारों गायों से भरे हुए गोष्ठ (गौशाला) में एक साँड़ के पास गिरा। श्रीरामजी ने त्रिजट को छाती से लगा लिया और सरयू-तट से लेकर उस पार तक जितनी गायें थीं, उन सबको मँगवाकर त्रिजट के आश्रम में भिजवा दिया और सांत्वना दी : ''ब्रह्मन् ! मैंने विनोद में यह बात कही थी, आप इसका बुरा न मानिये। आपका यह जो दुर्लंघ्य तेज है, इसीको जानने की इच्छा से मैंने आपको यह डंडा फेंकने के लिए प्रेरित किया था। यदि आप और कुछ चाहते हों तो माँगिये।''

त्रिजट ब्राह्मण ने जीविका का पर्याप्त साधन पाकर अन्य कोई माँग नहीं की। गायों के समूह को पाकर पत्नीसहित महामुनि त्रिजट को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने श्रीरामचन्द्रजी को यश, बल, प्रीति और सुख बढ़ानेवाले आशीर्वाद दिये।

(पृष्ठ ५ से 'बापूजी ने जीने का सही...' का शेष)अब भी समय है। यदि भारतवासी शास्त्रों में बतायी गयी, संतों-महापुरुषों द्वारा बतायी गयी युक्तियों का अनुसरण करें तो वह दिन दूर नहीं कि भारत अपनी खोयी हुई आध्यात्मिक गरिमा को पुनः प्राप्त करके विश्वगुरु पद पर आसीन हो जाय।''

काया को पवित्र व निर्मल बनानेवाला तुलसी-प्रयोग

बुद्धि को तेजस्वी व निर्मल बनाने का एक सरल प्रयोग बताते हुए पूज्यश्री कहते हैं : ''यदि प्रातः, दोपहर और संध्या के समय तुलसी का सेवन किया जाय तो उससे मनुष्य की काया इतनी शुद्ध हो जाती है जितनी अनेक बार चान्द्रायण व्रत रखने से भी नहीं होती। तुलसी तन, मन और बुद्धि - तीनों को निर्मल, सात्त्विक व पवित्र बनाती है। यह काया को स्थिर रखती है, इसलिए इसे 'कायस्था' कहा गया है। त्रिकाल संध्या के बाद ७ तुलसीदल सेवन करने से शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न और बुद्धि तेजस्वी व निर्मल बनती है।'' (क्रमशः)

प्रेमभरी सेवा लगन से...

एक बार संत दादू दयालजी के पास एक निराश-हताश महिला आयी और उसने अपनी दुःख-गाथा सुनायी। संत दादूजी ने कहा : ''सच्चे दिल से यदि तू सेवा करेगी तो पति ही क्या किसी पशु को भी वश में कर सकती है।'' महिला बोली : ''ठीक है महाराज ! आप जो बोलेंगे वह सब करूँगी लेकिन कुछ तावीज-बावीज तो दे दीजिये !'' तब दादूजी ने कागज पर कुछ लिखकर उसको तावीज में डाल के दिया। सभी शिष्यों को यह सोचकर आश्चर्य हुआ कि 'गुरुजी तो कभी किसीको तावीज नहीं देते लेकिन इस महिला की समस्या में ऐसी क्या विशेषता रही कि आज तावीज बना के दिये !' लगभग १ वर्ष बाद वही महिला बहुत सारा चढ़ावा ले के आयी और दादूजी को प्रणाम करके बोली : ''महाराज ! आपके दिये तावीज ने जादू कर दिया ! घर का सारा झगड़ा-झंझट दूर हुआ तथा घर में और हृदय में अब बड़ी शांति बनी रहती है।''

अब तो शिष्यों व भक्तों का कौतूहल पराकाष्ठा तक पहुँचा। दादूजी बोले : ''देवी ! तावीज खोलकर मेरे द्वारा लिखा हुआ वशीकरण मंत्र सभीको कंठस्थ कराना।'' तावीज में लिखा था :

दोष देख मत क्रोध कर, मन से शंका खोय।
प्रेमभरी सेवा लगन से पति वश में होय ॥

तब उस स्त्री को मालूम हुआ कि तावीज उसको संतुष्ट करने के लिए दिया गया था। वास्तव में हर कोई अपने सद्भाव, सद्व्यवहार, निर्दोष प्रेम, कर्तव्यपालन आदि गुणों से सभीका प्रियपात्र बन सकता है।

अद्भुत है गीता का ईश्वर - स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती

हम पूजा किसकी करें, किसके द्वारा करें, कौन-सी करें व पूजा करने से क्या प्राप्त होता है ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही श्लोक में देख लो -

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥

'जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत व्याप्त है, उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।'

(गीता : १८.४६)

अद्भुत है गीता का ईश्वर ! यह वेदांतियों का निर्गुण ब्रह्म नहीं है। आर्य समाज, ब्रह्म समाज का निराकार नहीं है। जो कुरान-बाइबिल में जीवन से बहुत दूर रहता है, वह नहीं है। जिसने एक बार सृष्टि बनाकर फेंक दी, वह भी नहीं है। यह ईश्वर तो वह है जो सृष्टि का कण-कण बनाकर सृष्टि में ही रहता है। अतः उसी ईश्वर की पूजा करनी चाहिए जो विश्व से अलग-थलग नहीं है।

ऐसी थी अम्माजी की गुरुभक्ति व गुरुनिष्ठा

(ब्रह्मलीन मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी महानिर्वाण दिवस : २६ अक्टूबर)

पूज्य बापूजी की माताजी श्री माँ महँगीबाजी (अम्माजी) का जीवन ईश्वर-पथ पर चलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक ऐसा आदर्श है जिसका अनुगमन कर वह आसानी से भगवत्कृपा का अधिकारी बन सकता है। अम्मा के जीवन का हर एक लमहा, हर एक दिन अपने गुरुजी पूज्य बापूजी के सत्संग के मनन, वचनों के पालन और उनके चिंतन में ही बीतता था। ऐसी दिव्य विभूति के जीवन-प्रसंगों को पढ़ने-सुनने व चिंतन करने से गुरुनिष्ठा व गुरुभक्ति को दृढ़ करने की प्रेरणा मिलती है। अम्माजी के कुछ जीवन-प्रसंग :

जब हिम्मतनगर में पूज्यश्री का पंचकर्म चल रहा था तब वैद्य ने उन्हें सूर्योदय के बाद ही बाहर खुले में निकलने के लिए कहा था। अम्माजी का कमरा थोड़ा दूर था। सुबह ५.१५ बजे अम्माजी की नींद खुली, आँख खुलते ही दोनों हाथ ऊँचे करके बोलने लगीं : ''आज तो जब साँईं आयेंगे, नाचेंगे, उसके बाद ही मैं बिस्तर से उठूँगी।''

सेविका के समझाने पर भी अम्माजी उस दिन नहीं उठीं। इतने में तो स्वामीजी (पूज्यश्री) आये, गाते-गाते अम्माजी के पास नाचने लगे और अम्माजी का हाथ पकड़कर उठाया।

भक्तों के संकल्प किस प्रकार ब्रह्मज्ञानी महापुरुष को खींच लाते हैं ! जैसे भगवान श्रीकृष्ण गोपियों को आनंदित करने के लिए छछियाभर छाछ पर नाचते थे, ऐसे ही पूज्य बापूजी को भी भक्तों की प्रेम-पुकार नृत्य करा देती है। प्रेम के भूखे होते हैं भगवान और भगवत्प्राप्त महापुरुष !

आप नहीं तो सब धूल-ही-धूल !

एक बार अम्माजी और पूज्य बापूजी बैठे थे। झूले पर पूज्यश्री के कपड़े पड़े थे। अम्माजी ने बापूजी से कहा : ''देखो, आपके होने से झूला भी भरा रहता है, मन भी भरा रहता है। आप हो तो सब कुछ है, आप नहीं हो तो कुछ भी नहीं, सब धूल-ही-धूल !''

पूरी दुनिया में मैं-ही-मैं हूँ

अम्माजी पूज्य बापूजी को 'साँईं' कहकर पुकारती थीं। एक दिन वे पूज्यश्री का इंतजार करते-करते सो गयीं। ११.३० बजे आँख खुली और 'साँईं, साँईं...' करने लगीं। साँईं कुटिया से बाहर आ गये। अम्मा बच्चों की तरह बोलीं : ''आप तो मुझे छोड़कर सत्संग करने चले जाते हो और मैं पूरा दिन इंतजार करती रहती हूँ।''

साँईं बोले : ''बच्चों की नाईं रोना क्यों ? ऐसा सोचो, 'मैं ही साँईं हूँ। पूरी दुनिया में मैं-ही-मैं हूँ। मैं अजर अमर आत्मा हूँ, ब्रह्म हूँ। ॐ ॐ ॐ...' ऐसा करके सो जाओ। ऐसा नहीं सोचना कि मैं अकेली हूँ।''

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२३ अक्टूबर : रविपुष्यामृत योग (सूर्योदय से रात्रि ८-४० तक)

२६ अक्टूबर : रमा एकादशी (यह व्रत बड़े-बड़े पापों को हरनेवाला, चिंतामणि तथा कामधेनु के समान सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाला है।), ब्रह्मलीन श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस

२८ अक्टूबर : धनतेरस (इस दिन घर के द्वार पर दीपदान करने से अपमृत्यु का भय नहीं होता।)

२९ अक्टूबर : नरक चतुर्दशी (शाम की संध्या और रात्रि में मंत्रजप करने से मंत्र सिद्ध होता है।)

३० अक्टूबर : दीपावली (रात्रि में किया हुआ जप अनंत गुना फल देता है।)

३१ अक्टूबर : नूतन वर्षारम्भ (गुजरात), बलि प्रतिपदा (पूरा दिन शुभ मुहूर्त, सर्व कार्य सिद्ध करनेवाली तिथि)

६ नवम्बर : रविवारी सप्तमी (दोपहर १२-१७ से ७ नवम्बर सूर्योदय तक)

९ नवम्बर : अक्षय-आँवला नवमी (इस दिन किया हुआ जप-ध्यान आदि पुण्यकर्म अक्षय होता है। आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर जप, पूजन करें, इससे विशेष लाभ होता है।)

११ नवम्बर : त्रिस्पृशा देवउठी-प्रबोधिनी एकादशी (इस दिन उपवास करने से १००० एकादशी व्रतों का फल प्राप्त होता है। जप, होम, दान सब अक्षय होता है। यह उपवास हजार अश्वमेध तथा सौ राजसूय यज्ञों का फल देनेवाला, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, उत्तम बुद्धि, राज्य तथा सुख प्रदाता है। मेरु पर्वत के समान बड़े-बड़े पापों को नाश करनेवाला, पुत्र-पौत्र प्रदान करनेवाला है। इस दिन गुरु का पूजन करने से भगवान प्रसन्न होते हैं व भगवान विष्णु की कपूर से आरती करने पर अकाल मृत्यु नहीं होती।)

१६ नवम्बर : विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-२४ तक) (विष्णुपदी संक्रांति में किये गये जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल लाख गुना होता है। - पद्म पुराण)

२० नवम्बर : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से रात्रि १-५८ तक)

साँईं श्री लीलाशाहजी की अमृतवाणी

(साँईं श्री लीलाशाहजी महानिर्वाण दिवस : ९ नवम्बर)

✼ जीवन्मुक्ति क्या है ? सदैव आनंद में रहना। हमें यही माँग करनी चाहिए। किसी बड़े उदार-हृदय सेठ के पास कोई याचक जाय और सेठ कहे कि ''माँग, जो तुझे चाहिए।'' तो क्या उससे अनाज की मुट्ठी माँगनी चाहिए ? सेठ के आगे यह बहुत तुच्छ माँग है। हमारे सेठों के सेठ भगवान हैं। क्या उनसे दुनिया के नाशवान, तुच्छ पदार्थों की माँग करें ? हमें माँगना चाहिए तो जीवन्मुक्ति। अन्य किसी चीज की माँग क्यों करें ? अपना-अपना कर्तव्य पालन करके स्वयं को पहचानकर जीवन्मुक्त बनें।

✼ ज्ञान होने के पश्चात् भी सद्गुरु, सत्शास्त्रों और सत्संग की स्तुति एवं महिमा-गान करते रहना चाहिए, जीवनपर्यंत करना चाहिए। ऐसा समझकर उसे न छोड़ना चाहिए कि 'सद्गुरु से काम हो गया, जो जानने योग्य वस्तु थी वह मैंने जान ली।' आत्मा के विचार से हम सब एक हैं किंतु शरीर के कारण गुरु, शास्त्र एवं सत्संग की सेवा और स्तुति करते रहना चाहिए और एक गुरु को ही अपना हितैषी, परमार्थ का परम मित्र समझकर शक्ति के अनुसार जो भी सेवा हो सके, वह सदैव करते रहना चाहिए क्योंकि गुरु की कृपा से ही जन्म-मरण के चक्कर से छूट के पूर्ण आनंद को प्राप्त करते हैं।

बछड़े का सत्संग-प्रेम व बहिणाबाई की प्रेमाभक्ति

- पूज्य बापूजी

महाराष्ट्र में एक बाई हो गयी - बहिणाबाई। इनका जन्म शक संवत् १५५१ में बैजापुर तालुका के देवगाँव में हुआ था। उस कन्या की शादी हो गयी। पति का नाम था रत्नाकर। बहिणाबाई संयम से रहती थी, ब्रह्मचर्य-व्रत पालती और पवित्र जीवन जीती थी। बहिणाबाई के पास एक गाय थी। गाय का बछड़ा बहिणाबाई को बहुत प्रेम करता था। बहिणाबाई भी उसको सहलाती थी। मानो बछड़ा मानता था कि 'यह मेरी माँ है' और बहिणाबाई मानती थी कि 'यह मेरा बेटा है।' वहाँ जयराम बाबा सत्संग करते थे। बहिणाबाई सत्संग में जाती तो बछड़ा भी उधर बैठता। जयराम महाराज के पास बहुत लोग आते तो बैठने के लिए जगह की तकलीफ होती थी। लोग बोले : ''बहिणाबाई का बछड़ा चार आदमी बैठें उतनी जगह ले लेता है।'' बछड़े की पूँछ हिला के कान पकड़कर चुपके से बाहर छोड़ के आये। अब बहिणाबाई तो चुप-चुप आँसू बहाये, रोये और पीछे बछड़ा 'माँ माँ माँ...' पुकारता।

उसकी 'माँ-माँ....' की आवाज सुनकर बहिणाबाई जोर से रोने लगी। जयराम स्वामी बोले : ''यह बाई रोती क्यों है ?''

लोग बोले : ''इसका बेटा बाहर रोता है।''

''कौन बेटा है ?''

''इसका बछड़ा।''

महाराज बोले : ''अरे, ले आओ, ले आओ। चार आदमी बाहर चले जाओ, उसको बैठने की जगह करो।''

बछड़े को अंदर लाये तो महाराज बोले : ''बैठो, बैठो बेटा !''

बछड़ा देखता है कि 'अब जयराम महाराज भी मेरे को प्यार करते हैं।' सत्संग चलता रहा। सत्संग पूरा होने पर जयराम महाराज को सब लोग प्रणाम करते तो बछड़ा भी आता और वह भी प्रणाम करता। कभी-कभी तो बछड़ा आगे के पैर झुका देता और सिर झुका के प्रणाम करता। लोग बोले : ''अरे ! यह बछड़ा है कि मुलगा (लड़का) है ? कितना समझदार है ! वाह !''

कुछ लोग ऐसे थे कि जिनका स्वभाव ही था दूसरों की निंदा करना, वे बोले : ''बहिणाबाई बछड़े को कथा में ले जाती है ! सब लोग उसकी और बछड़े की ही बात करते हैं। हम लोग तो इतने विद्वान हैं, हमारी

बात तो कोई करता ही नहीं !'' बहिणाबाई किसीके भी लांछन सुनकर दुःखी नहीं होती। कोई कुछ भी बोले पर दुःखी होना - नहीं होना अपने हाथ की बात है। निंदक लोग फिर बहिणाबाई के पति को कुछ-का-कुछ बहकाने लगे कि ''तेरी पत्नी ऐसी है, ऐसी है... जयराम बाबा के पास जाती है। उसने कीर्तन के बाद बाबा के चरणों पर मस्तक रखा। उन्होंने आँखों में पानी आने का नाटक किया और बहिणा की पीठ को सहलाया।'' बहिणाबाई को उसके पति ने मारा। 'उसने कुछ पाप किया होगा तभी तो पति ने मारा।' इस तरह की अफवाह फैलायी निंदकों ने। दुष्ट लोग दोनों तरफ डुगडुगी बजाते हैं।

बहिणाबाई के पति ने उसे बहुत मारा और उसके हाथ-पैर बाँधकर एक तरफ डाल दिया। गाय और बछड़े ने भी चारा-पानी छोड़ दिया। यह देखकर बहिणाबाई को उसके पति ने मुक्त कर दिया। बहिणाबाई ने बछड़े को देखा तो उसकी ऐसी हालत हो गयी थी कि उसे उठाते तो गिर जाता। गाय भी देखो तो कमजोर हो गयी थी। मनुष्य का शरीर लम्बे समय तक उपवास कर सकता है, पशु इतना नहीं कर सकते। बहिणाबाई ने बछड़े को अपनी गोद में लिया, हाथ घुमाया तो बछड़े ने बहिणाबाई की ओर देखा। उस समय बहिणाबाई के मकान-मालिक हिरंभट सहज ढंग से एक संस्कृत श्लोक बोलने लगे : ''मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।'' तो बछड़े के मुँह से श्लोक का अगला चरण उच्चारण होने लगा :

''यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।''

ऐसा बोलकर बछड़ा बहिणाबाई की गोद में शांत हो गया। गाय टुकुर-टुकुर देखने लगी कि 'मेरा बेटा भगवान का बेटा हो गया।' गाय की आँखों से आँसू बहे। बछड़े को दफन कराया गया।

बछड़े के मरने के बाद बहिणाबाई तीन दिन तक बेहोश पड़ी रही। होश में आने पर उसके मन में संत तुकारामजी के दर्शन की धुन सवार हो गयी। वह मन-ही-मन उन्हें प्रार्थना करते-करते भावों में डूब जाती।

बछड़े की मृत्यु के सातवें दिन शक संवत् १५६९ को संत तुकारामजी ने बहिणाबाई को दर्शन दिये, उसके सिर पर हाथ रखकर गुरुमंत्र दिया। तुकारामजी की कृपा से बहिणाबाई को पता चला कि 'यह शरीर तो मिथ्या है। दुःख-सुख भी मिथ्या है लेकिन उसको जाननेवाला मेरा पांडुरंग आत्मा सत्य है। ॐ आनंद... ॐ शांति...।' बछड़े और गाय की तो सद्गति हो गयी और बहिणाबाई की संत तुकारामजी की कृपा से परमात्म-ज्ञान में स्थिति होती गयी।

संत बहिणाबाई धन्य-धन्य हो गयी ! उस बाई पर जो भी दोषारोपण करते थे उनके मुँह पर तो लानत पड़ गयी। भगवान शाश्वत हैं तो भगवान के भक्तों की गाथा भी शाश्वत हो जाती है।

जेल-अधीक्षक का सराहना-पत्र

मुझे और मेरे स्टाफ को यह लिखने में बहुत खुशी महसूस हो रही है कि 'महिला उत्थान मंडल', संत श्री आशारामजी आश्रम, कपूरथला की ओर से यहाँ केन्द्रीय जेल में कैदी महिलाओं के लिए १९ से २६ सितम्बर तक योग कैम्प का बहुत ही सुनियोजित ढंग से आयोजन किया गया और महिला कैदियों ने इस कैम्प का पूरा लाभ उठाया। हम आशा करते हैं कि आपकी संस्था की ओर से भविष्य में भी इस तरह के योग कैम्प का आयोजन समय-समय पर किया जायेगा।

जेल-अधीक्षक

कपूरथला स्थित केन्द्रीय जेल - जालंधर (पंजाब)

प्रतिकूलता है कृपामय मौसी

(एक वीर, प्रभु-विश्वासी बहन की गाथा)

एक परिवार के ३ सदस्य - पति, पत्नी और पुत्र गंगा-स्नान करके गाड़ी-चालक के साथ हरिद्वार से दिल्ली लौट रहे थे । रास्ते में उनकी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गयी । महिला को छोड़कर शेष तीनों की मृत्यु हो गयी । जब उस महिला ने अपने सामने तीन लाशें देखीं तो उसकी आश्चर्यजनक स्थिति हो गयी । वह कभी हँसती, कभी रोती, कभी मूर्च्छित हो जाती और कभी भगवान के गुणगान करने लग जाती थी । मृतकों के अंतिम संस्कार की विधि पूरी हुई । परिजनों का दुःख हलका होने लगा लेकिन उस महिला की स्थिति यथावत् रही । परिवार के लोगों ने सोचा कि 'पति व पुत्र के वियोग के दुःख से इसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है, यह पागल हो गयी है ।' उसे अस्पताल ले गये ।
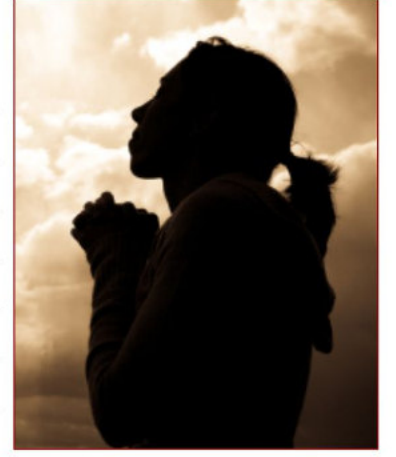
डॉक्टर ने भी यही कहा कि ''इनको जबरदस्त सदमा लगा है और ये अपना मानसिक संतुलन खो बैठी हैं ।'' जैसे ही डॉक्टर इंजेक्शन लगाने को तैयार हुआ तो वह बहन उठकर खड़ी हो गयी और कहने लगी : ''मैं बीमार नहीं हूँ, दुःखी व पागल नहीं हूँ । आप लोग सोचते होंगे कि पति व पुत्र के वियोग की वेदना से मैं घबरा गयी हूँ ।... नहीं, मैं प्रभु-विश्वासी भक्त हूँ । क्या मेरे प्रभु को यह पता नहीं था कि आज यह दुर्घटना होनेवाली है ? क्या मेरे प्रभु इस दुर्घटना को नहीं रोक सकते थे ?... आपको स्वीकारना होगा कि प्रभु सर्वज्ञ हैं, उन्हें यह पता था कि दुर्घटना होनेवाली है । प्रभु सर्वसमर्थ हैं, वे इस दुर्घटना को रोक सकते थे । परंतु बताइये, उन्होंने इसे रोका क्यों नहीं ?''

सब चुप थे । तब महिला ने कहा : ''यह दुर्घटना मेरे प्रभु की इच्छा से हुई है । मेरे प्रभु करुणासागर हैं ! उन्होंने मेरे साथ जो कुछ किया है मेरे भले के लिए ही किया है । अंतर्यामी प्रभु मेरा अहित कर ही नहीं सकते इसलिए मैं एकदम निश्चिंत, निर्भय और बहुत प्रसन्न हूँ । इस घटना से मेरा क्या हित होनेवाला है वह तो परमात्मा ही जानते हैं । मेरे जीवन में मैंने प्रभु से सदैव अपनी इच्छाएँ पूरी करवायीं । प्रभु ने मेरी हजारों इच्छाओं को पूरा किया । कुछ दिन पहले मैंने प्रभु से कहा था : 'हे प्रभु ! अब आप अपनी इच्छा को पूरी कीजिये ताकि मेरी तरह आपको भी प्रसन्नता मिले ।' आह ! मेरे प्रभु की इच्छा पूरी हो गयी । इसलिए मैं बहुत आनंद में हूँ । मैं अत्यंत आनंद में हूँ...'' ऐसा कहते-कहते वह शांति-सागर, प्रभु-रस में खो गयी । आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे, मुखमंडल पर आनंद का आलोक छा गया, रोम-रोम पुलकित हो गया । कुछ समय बाद बाह्य चेतनता आयी तो वह पुनः भगवान का गुणगान करने लगी ।

आपके जीवन में भी जब प्रतिकूलता आये तब आप सावधान रहें । 'सावधानी' का अर्थ है कि आप भयभीत न हों, चिंतित न हों, दुःखी न हों, उसमें घबरायें नहीं । यही सोचें कि 'यह प्रतिकूलता प्रभु की इच्छा से आयी है, प्रभु ने ही इसे मेरे हित के लिए भेजा है ।' उसमें आप अपने हित की खोज करें । यदि आपको अपने हित का दर्शन न हो, यह पता न लगे कि इसमें मेरा क्या हित है तो आप प्रभु से प्रार्थना करें, 'हे प्रभु ! आप करुणासागर हैं, आपने मेरे हित के लिए इस प्रतिकूलता को भेजा है लेकिन मुझे इसमें मेरा हित दिखाई नहीं देता । कृपा करके आप मुझे मेरे हित का दर्शन करवा दीजिये ।' प्रभु तत्काल आपकी प्रार्थना को सुनेंगे और प्रतिकूलता में आपको आपके हित का अनुभव करवा देंगे । जब आपको अपने हित का दर्शन होगा तो आप शांत, प्रसन्न व आनंदित हो जायेंगे । वह प्रतिकूलता आपके लिए मुक्ति का मार्ग ले आयेगी ।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''मनुष्य अनुकूलता तो चाहता है पर प्रतिकूलता नहीं चाहता - यह उसकी कायरता

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

वैराग्य से भरा अमृतोपदेश

वैराग्य शतक के रचयिता
योगी भर्तृहरिजी

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितं
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः कालो न विज्ञायते ।
दृष्ट्वा जन्मजराविपत्तिमरणं त्रासश्च नोत्पद्यते
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत् ।।

'अहो ! बड़े कष्ट की बात है कि यह जगत मोहमयी प्रमादरूपी मदिरा का पान करके कैसा उन्मत्त हो रहा है कि सूर्य के उदय-अस्त के साथ-साथ प्रतिदिन अपने जीवन का क्षय होना भी कोई नहीं देखता । नानाविध कार्यभार से व्यग्र (व्यस्त) हो सांसारिक व्यवहारों में लगे हुए समय का व्यतीत होना भी कोई नहीं जानता और जन्म, जरा, विपत्ति तथा मरण को देखकर भी कोई भयभीत नहीं होता !' (वैराग्य शतक : ७)

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषया
वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत् स्वयममून् ।
व्रजन्तः स्वातन्त्र्यादतुलपरितापाय मनसः
स्वयं त्यक्ता ह्येते शमसुखमनन्तं विदधति ।।

'विषय आदि चाहे कितने ही दिन तक क्यों न रहें, एक दिन अवश्य जानेवाले हैं इसलिए हम स्वयं उनका त्याग करें अथवा वे हमारा त्याग करें, उनके-हमारे वियोग में तो किसी प्रकार का संशय नहीं परंतु फिर भी संसारी मनुष्य स्वयं इनका परित्याग नहीं करते । जब अपनी इच्छा से विषयादि हमारा त्याग करते हैं तो हमारे मन को अत्यंत दुःख होता है परंतु यदि हम स्वयं इनका परित्याग कर दें तो अनंत शांति-सुख का लाभ प्राप्त कर सकते हैं ।' (वैराग्य शतक : १६)

अजानन् दाहार्त्तिं पतति शलभस्तीव्रदहने
न मीनोऽपि ज्ञात्वा वडिशयुतमश्नाति पिशितम् ।
विजानन्तोऽप्येते वयमिह विपज्जालजटिलान् न मुञ्चामः कामानहह ! गहनो मोहमहिमा ।।

'पतंगा इस बात को नहीं जानता कि जलने पर कैसी पीड़ा होती है इसीलिए वह प्रचंड अग्नि में कूद पड़ता है । मछली को भी बंसी में लगा हुआ मांस का टुकड़ा खाते समय पता नहीं रहता कि उसके भीतर लोहे का काँटा है परंतु हम तो यह जानते हुए भी कि विषय-भोग विपत्ति के जाल में फँसानेवाले हैं, उन्हें छोड़ नहीं पाते । अहो ! हमारा कितना बड़ा और घना अज्ञान है ।' (वैराग्य शतक : २०)

(पृष्ठ ३२ से शेष) है । अनुकूलता को चाहना ही खास बंधन है, इसके सिवाय और कोई बंधन नहीं है । इस चाह को मिटाने के लिए, विकास के लिए ही भगवान का कृपामय विधान है प्रतिकूलता तथा प्रेम और दयामय विधान है अनुकूलता । जैसे माँ सुधारती है, प्रतिकूलता देती है तब कृपा करती है और प्रेम, सुविधा देती है तब दया करती है । यदि जीवन में प्रतिकूलता आये तो समझना चाहिए कि मेरे ऊपर भगवान की बहुत अधिक, दुनिया से निराली कृपा हो गयी है । प्रतिकूलता में कितना विवेक-वैराग्य जगने की सम्भावना विकसित होती है, क्या बतायें ! प्रतिकूलता मानो साक्षात् परमात्मा के रास्ते ले

३ माह में बनाये ३५०० सदस्य अब ७५०० का संकल्प

'ऋषि प्रसाद' के माध्यम से मुझे पूज्य बापूजी की दिव्य अमृतवाणी पढ़ने का सौभाग्य मिला, मनुष्य-जीवन की महत्ता का पता चला । मुझे लगा कि जिनकी वाणी इतनी कल्याणकारी है उनके प्रत्यक्ष दर्शन-सत्संग का लाभ क्यों न लिया जाय । मैं पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में पहुँचा, मंत्रदीक्षा ले ली । पूज्यश्री की कृपा से मेरे जीवन में कई लौकिक फायदे तथा अलौकिक अनुभव हुए हैं । 'ऋषि प्रसाद' से मुझे इतना लाभ हुआ तो मैंने सोचा, 'क्यों न इसे बहुत लोगों तक पहुँचाया जाय' और मैंने 'ऋषि प्रसाद' के ३५०० सदस्य बनाने का संकल्प लिया जो कि गुरुकृपा से मात्र ३ माह में ही पूरा हो गया । इस दैवी कार्य में जिन दूसरे भाई-बहनों ने भी सहयोग दिया है वे भी खूब साधुवाद के पात्र हैं । ऐसे कुप्रचार के समय में हमारा शिष्य-धर्म निभाना विशेष जरूरी है । 'ऋषि प्रसाद' पढ़ने से जिनका पूरा जीवन ही बदल गया, ऐसे कई लोगों को मैं जानता हूँ । गुरुदेव के इस अनमोल प्रसाद को लोगों तक पहुँचाने में मुझे जो आनंद मिलता है, संतुष्टि मिलती है, उसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता है । अभी मैंने ७५०० और नये सदस्य बनाने का संकल्प लिया है तथा मुझे विश्वास है कि गुरुकृपा से यह संकल्प भी जल्दी ही पूरा हो जायेगा ।

- राकेश पटेल, सारोली, सूरत (गुज.)
सचल दूरभाष : ०९९९८४०५५९६

गुरुकृपा से खुला 'श्री गुरुप्रसाद हॉस्पिटल'

पहले मैं ब्रह्मपुरी, जि. चन्द्रपुर (महा.) के एक अस्पताल में मेडिकल ऑफिसर था । पूज्य बापूजी से मिली दीक्षा और सत्संग के प्रभाव से बहुत शांति व ज्ञान मिला और जीवन का वास्तविक उद्देश्य जाना । बापूजी ने प्रेरणा दी कि 'अपना निजी आयुर्वेदिक अस्पताल खोल ।' मैंने २०१४ में नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और अपना 'श्री गुरुप्रसाद हॉस्पिटल' खोल लिया । यहाँ पंचकर्म, आयुर्वेदिक उपचार तथा एक्यूप्रेशर से किडनी फेल्यर (गुर्दों की खराबी), हार्ट-अटैक, संधिवात, त्वचारोग, लकवा आदि असाध्य बीमारियों को ठीक किया जाता है ।

इसके अलावा मैं तथा मेरी पत्नी घर पर तथा स्कूलों में जाकर बाल संस्कार केन्द्र चलाते हैं । कॉलेजों में जाकर युवानों को पूज्य बापूजी के सत्संग पर आधारित सत्साहित्य द्वारा ब्रह्मचर्य की महिमा बताते हैं ।

- डॉ. राम निचंते (वैद्य)
बी.ए.एम.एस., एम.डी. (ए.एम.)
सचल दूरभाष : ०९५२७२५१४०४

विघ्न-बाधाओं और प्रलोभनों से कैसे बचें ?

आधा घंटा ॐकार के गुंजन के साथ एकटक इष्ट या गुरुदेव के श्रीचित्र को देखते रहो तो आपको एक सप्ताह में ऐसी धृति (धैर्य; ग्रहण या धारण क्षमता) प्राप्त होगी कि व्यावहारिक विघ्न-बाधाओं और प्रलोभनों से आप प्रभावित न रहकर अपने आत्मा-परमात्मा के उद्देश्य में टिके रहोगे ।

जो भगवान की शरण लेकर पुनः पाप न करने का निश्चय कर लेता है
उसको भगवान सब पापों से मुक्त कर देते हैं।

स्वरयोग विज्ञान : महत्ता व उपयोग

(गतांक से आगे)

स्वरों का प्रभाव

स्वरों और मुख्य नाड़ियों का परस्पर सीधा संबंध होता है। नाड़ियों के सम्यक् संतुलन से ही शरीर के ऊर्जा-चक्र जागृत रहते हैं तथा अंतःस्रावी ग्रंथियाँ क्रियाशील होती हैं।

स्वरों के हमारे शरीर व मन पर पड़नेवाले प्रभावों को समझकर यदि कार्य किया जाय तो अपेक्षित सफलता आसानी से प्राप्त हो सकती है। जब चन्द्र स्वर चलता है तो शरीर में गर्मी का प्रभाव घटने लगता है। अतः गर्मी-संबंधित रोगों एवं बुखार के समय चन्द्र स्वर को चलाया जाय तो वे शीघ्र ठीक हो सकते हैं। इसी प्रकार भोग के समय कामाग्नि और क्रोध व उत्तेजना के समय प्रायः मानसिक गर्मी अधिक होती है। अतः ऐसे समय चन्द्र स्वर को सक्रिय रखा जाय तो उन पर सहजता से नियंत्रण पाया जा सकता है। जब दोनों स्वर बराबर अवधि में, शरीर की आवश्यकतानुरूप चलते हैं, तभी व्यक्ति स्वस्थ रहता है।

दिन में रात्रि की अपेक्षा गर्मी अधिक रहती है। अतः जितना ज्यादा चन्द्र स्वर सक्रिय होता है उतना स्वास्थ्य अच्छा होता है। इसी प्रकार रात्रि में ठंडक ज्यादा रहती है। अतः उसको संतुलित रखने के लिए सूर्य स्वर चलाकर प्रगाढ़ निद्रा का लाभ उठा सकते हैं।

जिनका दिन में चन्द्र व रात में सूर्य स्वर स्वाभाविक रूप से अधिक चलता है वे प्रायः दीर्घायु होते हैं। स्वामी शिवानंदजी के अनुसार 'जिसकी दिन में लगातार इड़ा नाड़ी (चन्द्र स्वर) व रात्रि में लगातार पिंगला नाड़ी (सूर्य स्वर) चलती है वह महान योगी बन जाता है।'

ब्रह्मलीन श्री देवराहा बाबा बहुत दीर्घायु रहे। वे कहते थे :

रात चलावे सूर्य स्वर, दिन चलावे चन्द्र।
सुरजोगी१ भरपूर है, लहै अमर सब सोय ॥

अन्यत्र भी आता है :

दिन को जो चंदा चलै, रात चलावे सूर।
तो यह निश्चय जानिये, प्राण गमन है दूर ॥

चन्द्र और सूर्य स्वरों का असंतुलन थकावट, चिंता तथा अन्य रोगों को जन्म देता है। लम्बे समय तक रात्रि में लगातार चन्द्र और दिन में सूर्य स्वर चलना खराब स्वास्थ्य का सूचक होता है। संक्रामक और असाध्य रोगों में यह असंतुलन काफी बढ़ जाता है। अतः स्वर चलने की अवधि को समान कर (जो स्वर कम चलता है उसे अधिक चला के) इनसे मुक्ति पायी जा सकती है। (क्रमशः)

१. स्वरयोगी
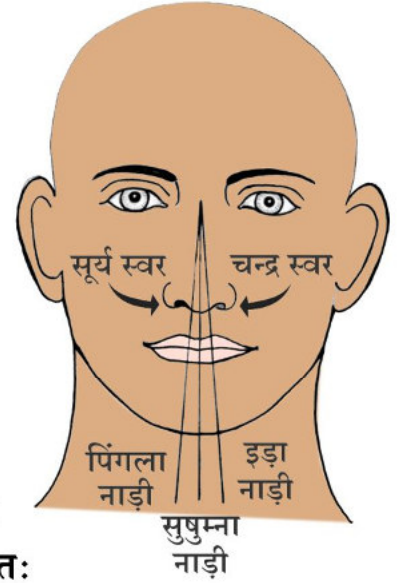
शलगम में छुपे स्वास्थ्य के गुण

शलगम का साग, सलाद व सूप के रूप में उपयोग किया जाता है। यह एंटीऑक्सीडेंट, खनिज लवण (कैल्शियम, लौह, ताँबा आदि), विटामिन्स (बी, सी) व रेशे का अच्छा स्रोत है। आधुनिक शोधों के अनुसार 'शलगम के सेवन से रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा कैंसर, सूजन, मोटापा, मधुमेह, हृदयरोगों से बचाव होता है। उससे उच्च रक्तचाप कम करने में मदद मिलती है। पेट तथा पाचन के विकारों में बहुत ही लाभदायक है। पेट साफ रहता है, कब्जियत दूर होती है।'

नियमित सेवन के लाभ

* कच्चा शलगम चबा के खाने से दाँत व मसूड़े मजबूत होते हैं।
* जिसका हृदय कमजोर हो, उसे कच्चा शलगम चबा-चबा के खाना चाहिए। सूप के रूप में भी उपयोग कर सकते हैं।
* मधुमेह के रोगियों को लाभदायक है। इससे रक्ताल्पता भी दूर होती है।
* शलगम को उबाल के उस पानी में पैर रख के बैठने से पैरों की सूजन व बिवाइयों से राहत मिलती है।
* मूत्रावरोध में शलगम व मूली का रस मिला के पीने से मूत्र खुल के निष्कासित होने लगता है।
* गला बैठने पर तथा गाने और भाषण देने वालों के लिए शलगम का साग लाभदायक है।
* हड्डियों का विकास ठीक से होता है। जिन बच्चों की हड्डियाँ कमजोर हों उन्हें गाजर के रस के साथ शलगम का रस मिला के देने से लाभ होता है।

गुरु दर्शन बिन बरसत नैना

गुरु दर्शन बिन बरसत नैना।
प्रतिपल राह तकत दिन रैना।
चित चकोर पावै नहीं चैना।
सद्गुरु सुहृद 'साक्षी' सुखसार ॥
गुरु दर्शन की बड़ी बलिहारी।
मिटे चिंता, दुःख, चाहत सारी।
छूटे द्वैत, दोष से यारी।
मन हो सम और निर्विकार ॥
गुरु दर्शन से हो परम शांति।
सात्त्विक जीवन, चित्त विश्रांति।
मिटे भेद भरम, भय, भ्रांति।
खुल जायें मन मंदिर द्वार ॥
गुरु दर्शन फल महासुखदाई।
निरखत घट घट में हरिराई।
जन्म कर्म की पीर मिटाई।
शिव स्वरूप गुरु प्राणाधार ॥
गुरु हरि से जोड़े मन तार।
बहे प्रभु-प्रेम, अमीरस धार।
छलके निज आनंद अपार।
सद्गुरु बिन कौन करे पार ॥
गुरु दर्शन से हो सार्थक जीवन।
खिले सदा सद्भाव सुमन।
भावविभोर हो पुलकित तन मन।
सद्गुरु बिन है घोर अँधियार ॥
सद्गुरु नाम अनमोलक हीरा।
जिसके बिना जीवन है अधूरा।
ब्रह्मतत्त्व परिपूर्ण है पूरा।
सद्गुरु महिमा बड़ी अपार ॥

- जानकी चंदनानी (साक्षी)

३१ अगस्त को देशभर में हुए धरने एवं निकली रैलियाँ

३१ अगस्त २०१३ को पूज्य संत श्री आशारामजी बापू को जोधपुर के लिए ले जाया गया था । गत ३१ अगस्त को पूज्यश्री को जेल में कष्ट सहते हुए ३ वर्ष हो गये । अतः इस दिन दिल्लीसहित अनेक शहरों में पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग को लेकर जोरदार प्रदर्शन हुए । धरना-प्रदर्शन व रैलियों में बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने तख्तियों, बैनरों एवं अन्य माध्यमों से बापूजी की निर्दोषता समाज तक पहुँचायी तथा काली पट्टियाँ बाँधकर पूज्यश्री पर हो रहे अन्याय का विरोध जताया । अनेक महिला संगठन एवं समाजसेवी संगठन इन प्रदर्शनों में बढ़-चढ़कर सम्मिलित हुए। (तस्वीरें आवरण पृष्ठों पर)

इस अवसर पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं विभिन्न मंत्रालयों के नाम ज्ञापन सौंपे गये, जिनमें बापूजी के केस की वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए बताया गया कि 'सभी महत्त्वपूर्ण गवाहों का परीक्षण हो चुका है और जैसा कि पहले आरोप लगाया गया था, तदनुसार भी अब अभियोजन (आरोपकर्ता) पक्ष के गवाहों को प्रभावित करने का कोई प्रश्न ही नहीं बचा।

७९ वर्षीय वयोवृद्ध बापूजी अस्वस्थ हैं और दिनोंदिन उनका स्वास्थ्य बिगड़ रहा है । उनके खिलाफ किये गये षड्यंत्र व उनकी निर्दोषता के अनेक तथ्य सामने आ चुके हैं अतः पूज्यश्री को शीघ्र रिहा किया जाना चाहिए।'

देशभर के अनेक संत व बुद्धिजीवी वर्ग के लोग लगातार पूज्य बापूजी की रिहाई की माँग करते रहे हैं। हाल ही में सुप्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी ने ट्विटर पर कहा : '२१वीं सदी में सबसे बड़ी भारतीय न्यायिक चूक है ७९ साल के संत आशारामजी बापू को न्यायालय द्वारा जमानत से निरंतर इनकार। केस बोगस है !'

पूज्यश्री की रिहाई हेतु संत-सम्मेलन व धरना

२७ अगस्त को जम्मू में हुए १४वें संत-सम्मेलन में संतों ने एकजुट होकर पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग की।

३१ अगस्त को पटना में पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की शीघ्र रिहाई व 'इंडिया न्यूज' टीवी चैनल के पदाधिकारियों की गिरफ्तारी की माँग को लेकर विभिन्न संगठनों द्वारा धरना-प्रदर्शन किया गया।

❀ नववर्ष की सुंदर सौगात ❀

पूज्य बापूजी के सत्प्रेरणा व शांति प्रदायक एवं चित्ताकर्षक श्रीचित्रों तथा अनमोल आशीर्वचनों से सुसज्जित वर्ष २०१७ के वॉल कैलेंडर

२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम, फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं। स्वयं के साथ अपने मित्रों, परिचितों को भी अवश्य लाभ दिलायें। सम्पर्क : अहमदाबाद मुख्यालय - (०७९) ३९८७७७३२

निरोगता, ओज-तेज व प्रसन्नता प्रदायक सत्साहित्य सेट

आरोग्यनिधि (भाग - १ व २), योगासन, जीवनोपयोगी कुंजियाँ, क्या करें - क्या न करें, गागर में सागर, निरोगता का साधन
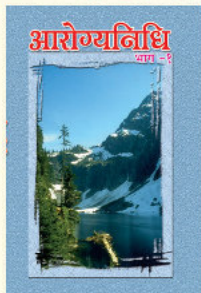
इनमें आप पायेंगे :

* स्वस्थ रहने के घरेलू उपाय
* परम सुखी होने की कला
* घर में सुख-शांति लाने के उपाय
* शक्ति, स्फूर्ति व निरोगता दायक योगासन
* किस सुरक्षा से राष्ट्र-सुरक्षा सम्भव ?
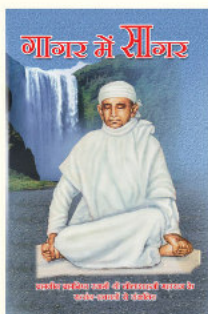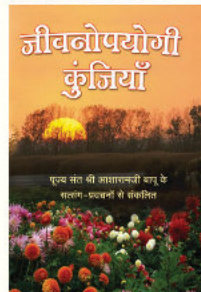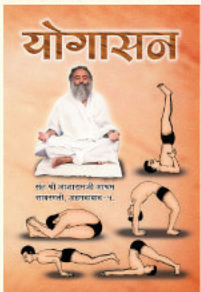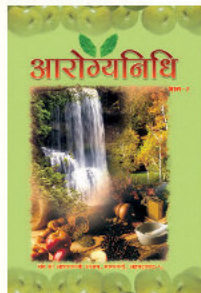
सत्साहित्य सेट का मूल्य : ₹ ८० (डाक खर्च सहित)

विद्यार्थियों को सफलता दिलानेवाला डीवीडी सेट

बाल संस्कार (भाग - १ से ४), योगासन, विद्यार्थियों के लिए, बच्चों के लिए वरदान, क्या जादू है तेरे ॐ में, बापूजी की बगिया के महकते फूल, माँ-बाप को मत भूलना, २५ दिसम्बर
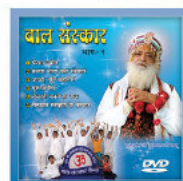
इनमें आप पायेंगे :

* विद्यार्थियों को उन्नत और महान बनानेवाले सत्संग व रोचक प्रेरक प्रसंग
* बापूजी की अनमोल युक्तियाँ
* विधिसहित योगासन, प्राणायाम, मुद्राएँ और व्यायाम
* बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम
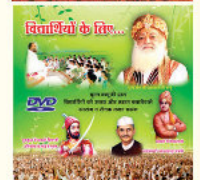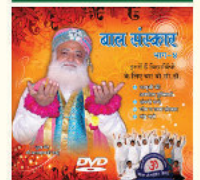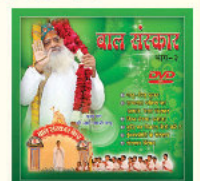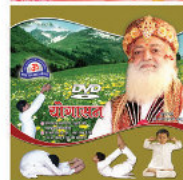
डीवीडी सेट का मूल्य : ₹ ५६० (डाक खर्च सहित)

इस सेट के साथ पायें १ डीवीडी निःशुल्क !

उपरोक्त सत्साहित्य एवं डीवीडी सेट आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३० ई-मेल : satsahityamandir@gmail.com

३१ अगस्त को निर्दोष बापूजी को कारावास का कष्ट सहते तीन वर्ष पूर्ण

धरनों-रैलियों एवं ज्ञापनों द्वारा की गयी शीघ्र रिहाई की माँग

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
Posting at Dehradun G.P.O.
between 4th to 20th of every month.
Date of Publication: 1st Oct 2016

पटना में धरना

देवास (म.प्र.)

लखनऊ

नसीराबाद जि. अजमेर (राज.)

इंदौर

रायपुर

नासिक (महा.)

धमतरी (छ.ग.)

भुवनेश्वर

दुर्ग (छ.ग.)

बड़ौदा (गुज.)

बेंगलुरु

छिंदवाड़ा (म.प्र.)

जयपुर

सहारनपुर (उ.प्र.)

पुणे (महा.)

सीलमपुर-दिल्ली

बिलासपुर (छ.ग.)

साकीनाका-मुंबई

रेवाड़ी (हरि.)

सोलन (हि.प्र.)

सूरत (गुज.)

छतरपुर (म.प्र.)

अमरावती (महा.)

जालंधर (पंजाब)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।